ॐ श्री सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की एकमात्र अधिकृत मासिक पत्रिका

15 फरवरी 2005 | वर्ष 25 अंक 4

संस्थापक : सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



प्रेम प्रकाश सन्देश

यह सुख रूप आत्मा अपने अन्दर ही है, अगर पुरूषार्थ करके उसे ढूंढा जायेगा तो वह मिल ही जायेगा- सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज

वार्षिक शुल्क :- रू. 50 (भारतवर्ष में), रू 500 (विदेश में)

संत कंवररामजी जब गौंसपुर में सद्गुरू महाराजजी के दर्शनार्थ मिलने पधारे तब लाला वसंदारामजी ने सद्गुरू महाराजजी से संत मिलन के संबंध में पूछा- उसी समय आचार्यश्री के श्रीमुख से प्रवाहित अमृत

सद्गुरू टेऊँराम अमृतवाणी

दिव्यता प्रेम की

जब सन्त आपस में मिलते हैं तो कितना आनन्द होता है. इस पर सद्गुरू महाराजजी ने कहाः

चार मिले, चौंसठ खिले, बीस रहे कर जोड़ ।
प्रेमी से प्रेमी मिले, फूले सात करोड़ ।।

अर्थात् दो नेत्र एक प्रेमी के ओर दो नेत्र दूसरे प्रेमी के जब आपस में मिलते हैं तब चौसठ दांत-बत्तीस दांत एक प्रेमी के और बत्तीस दांत दूसरे प्रेमी के खिल जाते हैं. बीस अंगुलियां-दस अंगुलियां एक प्रेमी की और दस अंगुलियां दूसरे प्रेमी की आपस में हाथ जोड़कर मिलते हैं. दो प्रेमियों के आपस में मिलने से साढ़े तीन करोड़ नाड़ियां एक प्रेमी के शरीर की और साढ़े तीन करोड़ नाड़ियां दूसरे प्रेमी के शरीर की कुल मिलाकर सात करोड़ नाड़ियां खिल उठती हैं और ऐसे दिव्य दृश्य देखने वालों के चित्त भी बड़े आनन्दित होते हैं.

अंदर के पेजों पर

मेला

अप्रैल में होगा चैत्र मेला जयपुर में

जगन्नाथपुरी धाम में भी है मेला मई में

नमः टेऊँरामाय ॐश्री सत्नाम साक्षी नमः सर्वानन्दाय

जयपुर में
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का
84वाँ चैत्र मेला

22 से 26 अप्रैल 2005 तक

देखो प्रेम आयके, अमरापुर स्थान ।
सन्त समागम पायके, अपना करो कल्यान ।।

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग ।
कह टेऊँ जिसके किए, होवे भव दुःख भंग ।।

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 आचार्य सद्‌गुरू टेऊँरामजी महाराज द्वारा स्थापित चैत्र मेला श्री अमरापुर स्थान जयपुर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में सिन्धी तारीख 12 से 1 चैत्र सम्वत् 2062 तदनुसार शुक्रवार 22 अप्रैल से मंगलवार, 26 अप्रैल, 2005 तक भव्य हर्षोल्लास से मनाया ज रहा है. इस महाब्रह्मयज्ञ में प्रेम प्रकाश मण्डल के सब सन्त एवं सारे भारत वर्ष के सन्त महात्मा, विद्वान, कवि, भगत सद्‌गुरू महाराज के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालेंगे. आप सबसे नम्र निवेदन है कि इस महोत्सव में सपरिवार आक अपने मानव जीवन को कृतार्थ करें.

कार्यक्रम

गुरूवार 21 अप्रैल, 2005	स्वामी गुरूमुखदासजी महाराज की 40वीं पुण्यतिथि
शुक्रवार 22 अप्रैल, 2005	प्रातः 6 से 8 बजे तक सत्संग, 8 से 10 बजे तक हवन एवं ध्वजावंदन सायं 3 बजे शोभायात्रा, 8 से 9 बजे तक सत्संग
शनिवार 23 अप्रैल से सोमवार 26 अप्रैल, 2005	प्रातः 6 से 11 बजे तक सत्संग, सायं 3 से 9 बजे तक सत्संग
मंगलवार 26 अप्रैल, 2005	प्रातः 4 बजे सत्संग शुरू होगा एवं प्रातः 7 बजे पल्लव प़ाकर उत्सव का समापन

शोभायात्रा का मार्ग

श्री अमरापुर स्थान से पोलोविक्ट्री, पुलिस लाइन, चांदपोल बाजार, छोटी चौपड़, बड़ी चौपड़, जौहरी बाजार सांगानेरी गेट, न्यू गेट, नेहरू बाजार, इन्दिरा बाजार, पांच बत्ती, एम.आई.रोड से पुनः अमरापुर स्थान पर समापन

नोट : १. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टार्च, गिलास जरूर लावें.
२. सोना गहना व कीमती सामान साथ न लावें.
३. कोई भी माता-बहिन अपने पिता, भाई या पुरूष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें

-सेवा में-
प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
अमरापुर स्थान, जयपुर-302001
फोनः 0141-2372423, 24 फैक्स : 2362424
e-mail : amrapur@premprakashpanth.com

-पता-
सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
श्री अमरापुर स्थान,
एम. आई. रोड, जयपुर-302001
website : www.premprakashpanth.com

ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत मासिक पत्रिका

प्रेम प्रकाश संदेश



15 फरवरी 2005
वर्ष 25 अंक 4

मंगल आशीष

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज
सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज

संस्थापक

सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षण–मार्गदर्शन

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिए –	50 रू.	500 रू.
तीन वर्ष के लिए –	140 रू.	1400 रू.

मूल्य एक प्रति 5 रूपए

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए.

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र–व्यवहार के लिए पता :– व्यवस्थापकः– कार्यालय– प्रेम प्रकाश संदेश,
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर ग्वालियर–474001,
फोनः0751–5045144 सांय 4 से 8 बजे तक, शेष समय 2454183फैक्सः0751–5045144
e-mail-editorpremprakashsandeshgwl@yahoo.com

अनुक्रम

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति गुरूवार, रविवार प्रातः 8 से 12 बजे तक व प्रति शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए प्रेम प्रकाश संदेश काउंटर पर श्री कुमार चंदनानी व श्री नारायणदास रामचंदानी जी के पास शुल्क जमा किया जा सकता है.

कथा–चूड़ाला शिखरध्वज–३६

ज्ञानवान की रहनी

कथा-वार्ता

समाज के लोग जब किसी को परमार्थ की तरफ बढ़ते देखते हैं तो सह नहीं पाते ओर तब उन्हें समझाने की कोशिश करते हैं कि भाई आपको समाजमें रहना है, आपको ऐसा नहीं करना चाहिये. सारी बातें लोग समझाते हैं.

दो प्रकार से संत लोग मानते हैं. एक तरह से ऐसे कि बाहर से तो लोगों की तरह ही व्यवहार करते हैं परन्तु अपने अंतर में अपने को आत्मतत्व मानते हैं, अपने आपको ब्रह्मस्वरूप मानते हैं.

दूसरे ऐसे होते हैं जो संसार की बातों की तरफ ध्यान न देकर अपने हिसाब से चलते हैं. जो बात सही लगती है उसको सही कहते हैं, जो बात गलत लगती है उसको गलत कहते हैं.

ज्ञान की गूढ़ता

सच कहने के भी अलग-अलग तरीके होते हैं. सत्गुरू महाराज जी से एक बार पूछा गया कि-मंसूर भी तो यही कह रहा था-एनलहक अहब्रह्मास्मि. मैं ब्रह्म हूं मैं आत्मा हूं, उसको सूली पर क्यों चढ़ा दिया गया. जबकि उसी समय कई लोग और थे, उसके गुरू थे जिन्होंने उसे उपदेश किया, उनको कुछ नहीं हुआ. मंसूर को ही इतने कष्ट क्यों दिये गये. गुरू महाराज जी ने जवाब दिया उसको ज्ञान तो मिला पर वो ज्ञान को पचा नहीं सका. ज्ञान को पचाना भी पड़ता है. पचाने का अर्थ है-कहां पर कौन-सी बात कैसे कहनी है, किसको कहनी है, किसको नहीं कहनी. यानि अगर आप दीवारों से सिर फोड़ते रहेगें तो कुछ होने वाला नहीं, दीवारों से सिर मारेगें तो सिर ही फूटेगा, दीवार को कुछ नहीं होगा. ऐसे ही पात्र-अपात्र को देखकर किस समय क्या अनुकूल है, क्या प्रतिकूल इसको देखकर ही व्यवहार करना चाहिए.

बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो समय को पहचानकर व्यक्ति को पहचानकर बात करे. कहना भी सच है परन्तु देश, काल, परिस्थिति इन तीनों का विचार क फिर बात कहनी चाहिए. अब राजा को पूर्ण वैराग था और रानी ने उसे आत्म तत्व की बात खोलकर दी तो राजा को समझ नहीं पड़ी वो कहता है-**उल्टा सुल्टा बोलती ये न तु** योग राजा रानीको समझा रहा है क

है-ऐसे कहने वाले सब, लोक देवाना कहते है.
सारी आयू दुनिया में सो, कहां न आदर लहते है

सारी उम्र ऐसे लोगों का कहीं आदर नहीं ह

लोग जिसे कछु मानत नाहीं, सो तुम बात बताती
बड़े शोक से कहना पड़ता, पगली ज्यों बर्रिड़ाती

इतनी उल्टी सीधी बातें कहती हो, जिसका अर्थ नहीं. मुझे बड़ा शोक हो रहा है ये कहते हुए आप पागलों की तरह बड़बड़ा रही हो. इतना कथा प्रसंग होके आया है. आज के प्रसंग में याज्ञवल्क्य कहते हैं-हे भारद्वाज! मुनि वशिष्ठ कहते हैं-हे राम सत्गुरू महाराज जी कहते हैं-हे जिज्ञासुओं!मुमुक्ष राजा अपनी रानी को समझाते हुए कहता है-

पहले तो तुम चतुर थीं, कहती बात संभार .
अब तुमको ये क्या भया, बोलत बिन वीचार.
जैसे चाहो तैसे विचरो, जो तेरा मन मानत है
ऐसे चलने वाले को सब, लोग अच्छा नहीं जानत
जैसे भावे तैसे बोलो, मेरा मन नहीं क्षोभत है
तुम तो रानीं परमसयानीं, तुझको ये ना शोभत
ये जो चाल चलत हो रानीं, मेरे मन ना भावत
तेरे को तो नेक लगत है, मुझको बहुत दुखावत
मूर्ख मेरा कहा न मानत, तुमको बहु समझाया
शायद मेरी किस्मत फूटी, कुल को दाग लगाया

प्रेम की पीड़ा

जब व्यक्ति का कोई प्रिय बिछड़ता है तो बड़ा दुःख होता है, अलग हो जाए कोई प्रिय तो अंतर में बड़ी पीड़ा होती हे. हमसे अलग रास्ते

निकलता है प्रिय तो बड़ा दुखहोता है. राजा का रानी से बड़ा प्रेम था एक दूसरे में, परन्तु जब रानी आत्मस्वरूप की बात कहने लगी तो राजा आत्म स्वरूप के बारे में ज्यादा समझ नहीं सका उसको तो जगत के भोग आकर्षित कर रहे हैं. राजा को बात समझ नहीं पड़ती जो रानी उसे समझाती है अतएव उसे बड़ा दुःख होता है और इसी कारण वह रानी को कहता है- **पहले तो तुम चतुर थीं, कहतीं बात संभार.**

हे रानी ! पहले तुम कितनी विचारवान थी जो भी बात कहती थी उसे सोच-विचार कर कहती थी आपके बोलने से मुझे सुख प्राप्त होता था. आपकी बातें सुनकर मैं आनंदित हो जाया करता था. परन्तु **अब तुमको ये क्या भया, बोलत बिन विचार.** अब आपको ये क्या हो गया है जो आप बिना विचारे उल्टा-सीधा बोलती हो. ऐसा करना आपको अच्छा लगता है. **जैसे चाहो तैसे विचरो** जैसे आपको अच्छा लगता है, जैसा आपका मन कहता है-वैसे करो. जब व्यक्ति किसी को समझाता है और दूसरा व्यक्ति नहीं समझता तो अन्ततः वह ऐसा ही बोलता है कि जैसे आपकी मर्जी हो वैसे करो. हमने तो आपको बहुत समझाया है पर तू नहीं समझता अब जैसे तेरा मन माने वैसा चल परन्तु ऐसा चलने वाले को लोग दीवाना कहते हैं. आगे राजा कहता है- **जैसे भावे तैसे बोलो, मेरा मन नहिं क्षोभत है.**

तुम्हारी मर्जी है, जैसा तुम्हें अच्छा लगे वैसा बोलती रहो. भले ही तुम बोलो मैं आत्मा हूं घट-घट वासी हूं, मैं सबसे न्यारा हूं, मैं स्थित हूं, मैं चलता हूं, जो तुम्हारे मन में आता है. बोलो, मेरा मन अब दुखी नहीं होता क्योंकि मैं तो समझ गया कि तुम्हारा दिमाग सही नहीं है.

किसी को पता चल जाए दूसरे व्यक्ति के बारे में कि ये पागल है, तो वो चाहे गालियां दे, कुछ भी कहे, मन में क्रोध नहीं आता, बल्कि उसको दया आती है कि ये तो पागल है इससे क्या कहें.

राजा भी रानी को कहता है-रानी! मैं जान गया हूं कि आपका दिमाग सही नहीं है अतः मुझे क्रोध नहीं आता पर **तुम तो रानीं परम सयानी, तुमको ये ना शोभत है** परन्तु आप रानी हैं. महारानी हैं. इस देश की सबसे ऊँची पदवी है आपकी, ऐसी बातें आपको शोभा नहीं देती. आपको अच्छा लगता है ऐसा? बताओ.

अरे रानी! लोग अच्छा नहीं मानते ऐसी बातों को. लोग कहेगें रानी पागल है, वह आपको अच्छा लगेगा बताओ. सब लोग आपके लिये ऐसा बोलें ये बात मुझे अच्छी नहीं लगेगी, मेरे को बड़ा दुख होगा कि मेरी प्रिय रानी यूं उल्टा सीधा बोलती है.

अरे! आप ऐसी बात कहती ही क्यों हो जो लोगों को अच्छा न लगे. मुझे अच्छा न लगे. राजा आगे रानी को समझाता है-

ये जो चाल चलत हो रानीं, मेरे मन ना भावत है

हे रानी! तुम जो चाल चल रही हो, जैसा व्यवहार आप कर रही हैं, ये बात मुझे आपकी अच्छी नहीं लगती है. ये बात सही नहीं है, गलत है.

तेरे को तो नेक लगत है, मुझको बहु दुखावत है.

आपको तो अच्छी लगती हैं ये बातें, तभी तो आप ऐसी बातें करती हो परन्तु ये बातें मुझे बहुत दुखाती हैं. आप ऐसे बोलती हो मेरे को दुख लगता है.

मूर्ख मेरा कहा न मानत, तुमको बहु समझाया है

हे मूर्ख! मैंने आपको इतना समझाया है, पर आप नहीं समझती, मेरा कहना नहीं मानती. शायद मेरी किस्मत ही फूटी है. **शायद मेरी किस्मत फूटी कुल को दाग लगाया है.** मैं तो ऐसा ही सोचता हूं शायद मेरी किस्मत ही खरांब है, जो मेरे कुल को दाग लग गया. सब कहेंगे राजा शिखरध्वज की रानी चूड़ाला वह पागल हो गई. पागल रानी से ब्याह किया है राजा ने. मेरी तो किस्मत ही खराब थी जो आपसे शादी हो गई. इस प्रकार राजा बड़ा दुख करने लगा.

जब व्यक्ति समझा नहीं पाता तो अपने कुल का, अपना, अनेक प्रकार से किस्मत का सहारा लेता है कि मेरे भाग्य में ऐसा है, वैसा है. तुम ऐसे हो गये हो. ऐसी

कई बातें राजा रानी को कहता है. इस तरहके राजा के प्रलाप सुनकर बहुत ही आश्चर्य कर मनमें बड़ी दुखी हुई रानी. रानी क्या विचार करती है. गुरू महाराजजी बताते हैं-

इतना कहके उठ चले, राजा करन स्नान.
यहां रानीं मन आपने, करत भई अरमान.
अहो मुझे ये बड़ा कष्ट अति, दिल मेरीं घबराई है.
अब तक आत्म पद में राजा, स्थिति ना कछु पाई है.
वचन हमारा समझा नाहीं, और अधिक क्या कहना है.
क्या करूं अब जाऊं किधर मैं, राजन के संग रहना है.
ऐसे आत्म निश्चय धारे, घर के कार्य करत रहीं.
जैसे अज्ञ काल में चरतीं, तैसे हीं वह चरत रहीं.

रानी को इतना समझाकर राजा स्नान करने के लिए उठ गये परन्तु रानी के मन में बड़ा अरमान हो गया. बड़ा दुख हुआ रानी को.

ज्ञानी की करूणा

यहां रानीं मन अपने, करत भई अरमान..

रानी अपने मन में बड़ा दुख करने लगी. अहो! मेरी दिल बड़ी घबराती है, राजन की ऐसी वैसी बातें सुनकर मेरे मन में बड़ा कष्ट हो रहा है. ऐसा राजन को कैसे हो गया.

अहो मुझे ये कष्ट बड़ा अति, दिल मेरीं घबराई है.
अब तक आतम पद में राजा, स्थिति ना कछु पाई है.

रानी के दिल में बड़ा दुख होता कि राजा को अभी तक आत्मपद में कोई स्थिति प्राप्त नहीं है. रंचक-मात्र भी राजा आत्म पद में स्थित नहीं है. इतना संतों का संग किया. जब हम वन में गये थे तो दोनों ने मिलकर संतों के सत्संग का श्रवण किया, दोनों ने साथ ही बात समझी परन्तु राजा की स्थिति उस आत्म पद की ओर अभी भी नहीं हुई. बड़े दुख की बात है कि मेरे को तो ज्ञान हो गया, पर मेरे पति को अभी तक ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ. करूणा होने लगी रानी को.

संत-महात्माओं में भी ये ही करूणा होती है कि जैसा न आनंद हमें आया है वैसा सभी को मिल जाए. वे तो चाहते हैं ऐसा परन्तु कोई लेने वाला भी तो होवे.

रानी के मन में भी ऐसा ही विचार आता है कि जैसी मेरी स्थिति राजा की भी होवे. राजा ने भी तो संतों के संग में किया होगा, आत्मपद के बारे में कुछ समझा हो इसीलिए मैंने राजा को अपनी आत्म स्थिति से अव कराया पर राजा पर तो इसका उल्टा ही प्रभाव प मुझे बड़ा दुख है कि वो ज्ञान अभी तक राजा फलीभूत नहीं हुआ.

वचन हमारा समझा नाहीं, और अधिक क्या कहना

मैंने जो वचन कहा वो राजा समझा नहीं है, और अधिक क्या बात करूं उससे इसके बारेमें. इतनी बात नहीं समझा तो आगे क्या समझेगा. परन्तु भी क्या करूं?

क्या करूं अब जाऊं किधर मैं, राजन के संग रहना

अब मैं क्या करूं किधर जाऊं, रहना तो राजा के संग ही है और कहीं तो मैं जा नहीं स क्योंकि स्त्री का धर्म है पति के साथ रहे.

रानी चूड़ाला पतिव्रता स्त्री थी विचार करती स्त्री का, पत्नी का धर्म भी मुझे पालना है जैसा पति वैसा ही मुझे रहना है और कुछ नहीं करना मेरे

ऐसे आतम निश्चय धारे, घर के कार्य को करत र

ऐसा रानी ने निश्चय किया कि जैसे अब कहता है वैसे चलूं, परन्तु अंदर में मुझे अपने आत्म में ही स्थित होना है. राजा बात नहीं समझता, पता कब समझे. जब समझेगा तब की बात और है. प आत्म कल्याण तो मुझे ही करना है. रहना भी इध और काम भी करना है.

विचार करें हमें संसार में भी रहना है संसार छोड़के, संसार से भागकर अगर हम चाहें कि हम प्राप्त करें तो बात सही नहीं है. संसार से भागकर जाया नहीं जा सकता क्योंकि सभी जगह वही संसार भागकर हम जायेगें कहां? और करेगें क्या? तो भी घर में है,वही परिस्थिति है पर उस परिस्थिति अपने आपको बदलना आना चाहिए. जो जगह प्राप्त जो परिस्थिति प्राप्त है, उसी परिस्थिति में उसी

पर रहते हुए अपने आप को बदलना है. अपने मन की धारा को बदलना है. मन की धारा जो संसार की ओर बह रही है उसे परमात्मा की ओर कर दो.

लक्ष्य की ओर कदम

कार्य भी करें और अपनी वृत्ति परमात्मामें भी, आत्मामें भी लगाते रहो. जैसे पहले के जमाने में माताएं पानी भरने के लिए जाती थी तो सिर पर एक के ऊपर एक मटका रखती थीं और बगलमें भी मटका लेकर चलती थीं. अपना बच्चा भी लेकर जाती थीं. इतना सब करते हुए भी अपनी सखीके साथ बातें करती हुई चलती थीं, फिर भी जो घड़े थे वे गिरते नहीं थे.

सिर घट ऊपर घट धरे, बगल में गागर बाल.
चलतीं सखी से बोलतीं, रखतीं घट में ख्याल..

घड़े गिरते क्यों नहीं क्यों कि उसका सारा ख्याल मटकों की तरफ है कि कहीं मटके गिर न जाऐं, ऐसा सोच के बैलेंस से चलती है. जैसे ड्राईवर गाड़ी चलाता है तो अपने मित्र के साथ बात करता है पर कार का बैलेंस बिगड़ने नहीं देता. बात भी करता है, टेप रिकार्डर भी सुनता है परन्तु गाड़ी बिल्कुल सही चलाता रहता है.

ऐसे ही सभी कार्य करते हुए भी हमारी आत्मपद के अंदर स्थिति हो सकती है, ऐसी बात नहीं कि आत्मपद में स्थिति के लिए हमारे को सब काम-काज छोड़ना पड़े.

इसीलिए संसार में रहते हुए भी आत्मपद की प्राप्ति हो सकती है. ऐसा हम बहाना न करें कि हम तो गृहस्थी हैं. कैसे बाल-बच्चों की करें, ये आत्मपद की बाते हैं यह जो अपना घर बार छोड़े उसी को प्राप्त हो सकती हैं. अन्य किसी को प्राप्त नहीं हो सकती. ये बहाने मत बनाओ. जो जहां पर है, जिस स्थिति में है, जिस स्थान पर है उसी स्थान पर आत्मपद की प्राप्ति हो सकती है. ये तो अपनी उत्कंठा है.

रानी भी ऐसा निश्चय धारके घर के कार्य पूर्ववत् करने लगी. **जैसे अज्ञकाल में चरतीं, तैसे हीं वह चरत रहीं** यानि जब अज्ञान की अवस्था थी तब जिस प्रकार कार्य करती थी वैसे ही वह कार्य करने लगी उसने सोचा राजा के साथ रहना है. पर मैं अंतर में अपनी स्थिति में मस्त हूं.

ये जो चार वचन सुने हैं उनका विचार करेगें, विचार में ही आनंद है.

बसंतोत्सव का आगमन

पतझड़ बीत रहा पीत वर्ण पत्र झड़ रहे ।
बसंतोत्सव आगमन के शिखर पर चढ़ रहा ।
नवीन वस्त्रों से सुसज्जित वृक्ष-लताऐं ।
नई कोपल धारण किये, सुंदर वन में शोभित हो रही ।
चहु दिशी शीतल मन्द-मन्द समीर लहरा रही ।
अमराइयों में बैठी कोयल की मधुर कूक, पक्षियों का कलरव ।
नन्हे-नन्हे मधुर स्वर से, भांति-भांति गीत सुना रहे ।
सर्वत्र बगीयों की फुलवाड़ियां दूर-दूर से चमक रही ।
रंग बिरंगी तितलियां बागनि के फूलों पर मंडरा रही ।
सरसों पीले फूलों की सुदंर ओढ़नी ओढ़ रहे ।
रंग रंगीले फूलों की हरियाली सुंदरवर्ण से शोभित हो रही ।
भौरों की टोलियां चुन-चुन कुसुम को चूम रही ।
अपूर्व वरदान लिये प्रकृति सज-धज कर तैयार खड़ी ।
सम्पूर्ण सृष्टि मुदित मन से, उत्साह उमंग से हृदयांदित कर रही है ।

गुरूकृपा, अमरापुर, जयपुर

प्रभु से अपनत्व

प्रेम सम्बन्ध

आपने यह लोकोक्ति सुनी होगी-**अपना काना कुरूप लड़का भी मां को सुन्दर लगता है.**

एक विद्वान ने अपने प्रवचन में कहा - चन्द्रमा सबको अच्छा लगता है. सबको सुन्दर और सुखद लगता है; किंतु कोई चन्द्रमासे प्रेम नहीं करता; क्योंकि कोई चन्द्रमा को अपना अनुभव नहीं कर पाता.

इसका अर्थ हुआ कि प्रेम के लिये अपनत्व होना आवश्यक है. प्रेम के लिये सौन्दर्य, सद्गुण होना उतना आवश्यक नहीं है. प्रतिवर्ष ही प्रायः विश्वसुन्दरी का चुनाव होता है. आप भले ही, उनमें किसी को देखते न हों किंतु चित्र तो देखने को मिल जाते हैं. वासनात्मक उत्तेजनाकी बात छोड़ दी जाय तो क्या कभी इनमें कोई आपको अपनी पुत्री या बहिन के समान प्रिय लगी? यही बात गुणों के संबंध में भी है.

प्रेम की परिभाषा करते हुए देवर्षि नारदने अपने भक्ति-दर्शन में कहा है -

गुणरहितं कामनारहितं प्रतिक्षणवर्धमानम्.

सौन्दर्य और गुण आवश्यक भले न हों, ये प्रेमकी अभिवृद्धि में सहायक होते हैं-ठीक बात ; किंतु कब? जब उससे अपनत्व हो. आपके शत्रुमें या शत्रुके सहायक में सौन्दर्य या गुण हों तो प्रेम बढ़ायेंगे या वितृष्णा-असूया उत्पन्न करेंगे?

यह सब न भी कहा जाय तो कुछ हानि नहीं; क्योंकि परम सौनदर्यैकराशि, निखिल सद्गुणगणैकधाम कन्हाईसे अधिक सुन्दर, अधिक गुणवान् तो त्रिभुवनमें कभी कोई न हुआ, न होना सम्भव है. इस सौन्दर्य-सौकुमार्य महासिन्धुके सीकरका प्रसाद ही सृष्टिमें सौन्दर्य बनकर फैला है. इस गुणगणैकधामके गुणोंकी छायामात्रसे त्रिलोकीमें अनादिकालसे प्राणियों को सद्गुण मिलते रहे हैं.

इतने पर भी कन्हाई से प्रेम नही है या अल्प है तो इसका कारण होन चाहिये. कारण केवल यह कि इस नन्द-तनय से अपनत्व नहीं है या शिथिल है, अल्प है.

अपनत्व सहज भी होता है और स्थापित भ किया जाता है. इसमें सहज अपनत्व सुदृढ़ होता है कदाचित् ही कभी किसीमें सहज अपनत्व के प्रति शैथिल्य दीखता है और जहां ऐसा है, वे हीन प्रकृति के लोग हैं.माता-पुत्र, पिता-पुत्र, भाई-भाई बहिन-भाई आदिका अपनत्व सहज है, नैसर्गिक है. इसमें स्वार्थ य कोई दुर्गुणही शिथिलता लाता है

स्थापित अपनत्व सुदृढ़ नहीं ही होगा, ऐसी को बात नहीं है. यदि दोनों सत्पुरूष हैं तो स्थापित संबंध भी सुदृढ़ अपनत्व उत्पन्न करने में पूरा समर्थ है.

अनेक नारियों ने विपत्ति में किसी को राखी भेज दी और जिसे भेजी, उसने अपना सर्वस्व न्यौछावर क दिया उस बहिन की रक्षा के लिये. दत्तक पुत्र बनाने क तो शास्त्रीय विधान ही है. इस प्रकार धर्म भाई, ध बहिन, मित्र पुत्र या पुत्री बनाने की-अपनत्व स्थापि करने की परम्परा समाजमें खूब प्रचलित है. यद्यपि ऐसे संबंध में आजकल बहुत दोष आने लगे हैं, किंतु य दोष कुपुरुषों में आते हैं. सत्पुरूष तो एक बार जिस पुत्री कह देते हैं, उसके साथ पुत्रीका व्यवहार जीवनभ निभाते हैं.

कन्हाई को संबंध निभाना बहुत अच्छा आता है इससे आप आशा नहीं कर सकते कि यह अपने सा स्थापित संबंध को अस्वीकार करेगा या उसके अनुसा व्यवहारमें शिथिलता लायेगा.केवल आपकी ओरसे शिथिलत नहीं आनी चाहिये. आपके भीतर संबंध के प्रति उपेक्ष या उदासीनता नहीं होनी चाहिये.

कृत्रिम सम्बंध ही नहीं होता. अनेक लोग कह हैं-मैं तो आपका बालक हूं. ऐसा केवल मुखसे कहन कोई भी शिष्टाचार ही मानता है. तब कन्हाई ही कै

उसे स्वीकार कर लेगा?

कन्हाई से क्या सम्बंध बनाया जाय?

व्यर्थ प्रश्न है. ऐसा कोई संबंध नहीं, जो इससे न बनाया जा सके और जिसे यह स्वीकार न करे. संबध सच्चा बने आपके मनमें, केवल यह आवश्यक है.संबंध सच्चा बनने के लिये आवश्यक है कि आपके मनमें, आपके जीवनमें उस संबंधकी मांग हो. सुन सुनाकर, यह जानकर कि अमुक संबंध सर्वश्रेष्ठ है, संबंध बनाने से बनता नहीं. वह कृत्रिम होकर रह जाता है.

एक लड़की के कोई भाई नहीं था. राखी-पूर्णिमा को उसने अपनी माता के कहने पर गोपाल को राखी बांध दी और गोपाल उसका भाई बन गया ; क्योंकि बहिन को सचमुच भाई की आवश्यकता अनुभव हो रही थी. उसके एक भी दूसरा भाई होता तो कहा नहीं जा सकता कि कन्हाईमें उसका भ्रातृत्व सुदृढ़ होता या नहीं.

एक माता का इकलौता पुत्र मर गया. उसके दुःख की सीमा नहीं. किसी संतने कह दिया-यह कृष्ण तेरा पुत्र है. उसने संतकी बात पकड़ ली. उसे तो पुत्र चाहिये ही था. उसने श्रीकृष्णको पुत्र बनाया. श्रीकृष्ण में दम है कि उसे मैया नहीं मानेगा? इस प्रकार अनेक स्त्री पुरूष जो सन्तानहीन थे, कन्हाई के मैया-बाबा बन गये. श्याम को किसी का पुत्र बनने में संकोच कहां.

अनेक विधवाओं ने श्याम को पति बना लिया. अनेक कुमारियों ने कन्हाई को पति स्वीकार किया. कृष्ण को ना करना नहीं आता. संबंध जोड़नेवाला सच्चा है तो संबंध सुदृढ़. संबंध सुदृढ़ तो प्रेम की प्राप्ति सुनिश्चित. मैं ब्रजराजकुमार को जीजाजी बनाऊंगा. ऐसे पुरूष भी मिले और कन्याएं भी मिलीं. श्रीराधा को कोई बहिन बनाना चाहेगा तो वह भी कहां अस्वीकार करना जानती हैं.

मैं इसे देवर बनाऊंगी. एकने कहा- इसे और कीर्तिकुमारी को भी मेरा रौब मानना पड़ेगा.

किसके मुख में हाथभरकी जीभ है और जो कह दे यह संबंध नहीं बन सकता.

कन्हाई पिता भी बनने को प्रस्तुत और पुत्र भी. यह केवल स्वामी ही नहीं बनता, आपमें दमखम हो तो इसे सेवक बनने में भी आपत्ति नहीं है.

तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानियै जो भावै.

यह बात है गोस्वामी तुलसीदासकी-एक विनम्र सेवक की. जो आपको रूचे सो, यह बात सेवक ही कह सकता है. आवश्यक नहीं कि आप भी यही कहें. आपको जो रूचे वह बनाइये इस गोपकुमार को; किंतु पहले देखिये कि आपके हृदय में सचमुच उस सम्बंधकी मांग है या नहीं. आप उस संबंध के प्रति सच्चे रहेंगे तो कन्हाई भी सच्चा रहेगा. आप कन्हाई को पुत्र या छोटा भी कहें और मन्दिरमें मत्था टकें, स्तवन करें, आशीर्वाद देने में हिचकें तो क्या आपका संबंध सच्चा है? कन्हाई को अपना कुछ बना भी लें और चिन्ता, भय एवं लोभ बचे रहें, सम्भव है ? आपको इससे प्रेम करना है तो इससे संबंध जोड़िये; पर वह संबंध जिसे आप जीवनमें सच्चा बना सकें.

मृत्यु की खोज

टन्-टन्-टन् गिर्जाघर की घंटी बजते ही तीनों मित्रोंने अचानक आमोद-प्रमोद से मन फेर लिया. फलैंडरस जनपदमें किसी व्यक्ति की मृत्युकी सूचना दी घण्टी-नादनेऔर वे राग-रंग भूलकर शरीर की नश्वरता पर विचार करने लगे.

भाई ! हमलोगों ने आजतक रेगरेलियों में अपने अमूल्य जीवनका दुरूपयोग किया. समय बड़ी निर्ममता से बीतता जा रहा है. हमलोगों को भी किसी-न-किसी दिन इसी तरह मरना पड़ेगा. हमें मृत्यु की खोजमें लग जाना चाहिये. मनुष्य शरीर अत्यन्त दुर्लभ है. एक मित्रका प्रस्ताव था और तीनों मृत्यु की खोज में निकल पड़े. वे उस गांवकी ओर चले जिसमें असंख्य प्राणी महामारी आदि से काल के गालमें समा रहे थे.

हम मृत्यु की खोज कर रहे हैं. उसने हमारे अनेक बन्धु बान्धवों का नाश किया है. अनेक शिशुओं

को पितृहीन कर दिया है. असंख्य युवतियों को वैधव्य प्रदान किया है. उन्होंने एक बूढ़े व्यक्तिसे पूछा जो उन्हें गांव में प्रवेश करते ही दीख पड़ा उसके शरीर पर झुर्रियां पड़ गयी थी, कमर झुकी हुई थी और सिर हिल रहा था.

मृत्यु की खोज बहुत ही कठिन है. तुम उसके पीछे पड़कर अपनी जान क्यों दे रहेहो. वह बड़ी स्वार्थी, कठोर और भयंकर है. यदि तुम उसे देखना ही चाहते हो तो मैंने उसको पेड़ के नीचे छोड़ दिया है. सावधान! है वह बड़ी विकराल! बूढे ने थोड़ी दूर पर स्थित एक जंगली पेड़की ओर संकेत किया. वे दौड़ पड़े.

हमलोग कितने भाग्यवान् हैं देखो न, बूढेने हमें कितना धोखा दिया. इस पेड़के नीचे तो अपार स्वर्ण राशि है जिससे हमलोग कई वर्षोंतक आमोदप्रमोद से जीवन बिता सकते हैं. सबसे छोटे मित्रने प्रस्ताव किया कि रात होते ही इसे घर ले चलना चाहिये; दिनमें कोई देख लेगा तो प्राण चले जायेंगे. तीनों की सम्मति से सबसे छोटे को ही भोजन की सामग्री लाने के लिये बाजार जाना पड़ा.

हम दोनों अकेले ही इस धन को आपस में [illegible] लें तो हमारा जीवन विशेषरूप से सुखमय हो जाये[illegible] दोनों ने राय की और छोटे के आते हीं उसे कटा[illegible] मार डालने का निश्चय किया.

इधर छोटे मित्रके मनमें भी धन का लोभ [illegible] हुआ. उसने भोज्य और पेय पदार्थ में विष मिला [illegible] था उन दोनों की जीवन-लीला समाप्त कर देने के लि[illegible]

छोटे मित्रका का बाजार से लौटना था कि धन[illegible] लोभ से अंधे होकर दोनों ने उसका प्राणान्त कर डा[illegible] पीठमें कटार भोंककर और भोज्य और पेय पदार्थों [illegible] ग्रहणकर आनंद से आमोद मनाने लगे. धीरे-धीरे वि[illegible] प्रभाव बढ़ता गया और थोड़ी देर में उन दोनों ने [illegible] सदा के लिये आंखे मूंद लीं. चले थे तीनों मृत्युका [illegible] करने और नष्ट हो गये स्वयं.

मृत्युका दर्शन जंगली वृक्ष के नीचे होगा-बूढ़े[illegible] यह बात वातावरण में परिव्याप्त थी.

सूचना प्रेम महिमा अंक

प्रेम छिपाया ना छिपे, जां घट प्रकट होय
मुख से कुछ ना कहि सके, नैन देत है रोय

जिसे विशुद्ध सच्चे प्रेम की प्राप्ति हो गयी, उसे भगवान मिल गये-यह मानने में हमें संकोच नहीं होना चाहिये. प्रेम न हो तो रूखे सूखे भगवान भाव जगत की वस्तु रहें ही नहीं.

जैसे परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है, वैसे ही प्रेमतत्व (आनन्द रस) भी सर्वत्र व्याप्त है. संसार में बिना प्रेम या आनन्दरस के एक दूसरे से मिलना नहीं हो सकता. यदि प्रेम रस न हो तो शेष सभी रस नीरस होंगे. कहते हैं कि गुड़ के संबंध से नीरस बेसन में मिठास आ जाती है. पर एक बात बड़ी विलक्षण है, वह है प्रेमरस साधना की. प्रेम रस से परिपूर्ण साधना का प्रारम्भ भगवान में अनुराग को लकर ही होता है राग का स्वभाव ही मधुरता है और यह मधुरता आती है अपनेपन से.

प्रेमरस से प्रभू को अपना बनाने वाले प्रेम पथि[illegible] से धर्मशास्त्र इतिहास भरे पड़े हैं.हनुमान, शबरी,वि[illegible] मीरा, राधा का प्रेम तो जगद्विख्यात है ही-

प्रेम प्रेम सबको कहे, प्रेम बिना नहीं कोय.
टेऊँ साचा प्रेम सो, जो लगा हरि से होय.
कर्मा कुब्जा भीलनी हाथी और हनुमान.
टेऊँ केवल प्रेम करि पाया हरि भगवान.

ऐसे मुधरातिमधुर प्रेम महिमा विषय पर आ[illegible] प्रिय प्रेम प्रकाश संदेश चैत्र मेले के अवसर पर [illegible] अप्रैल को प्रेम महिमा अंक का प्रकाशन कर रहा[illegible] तो उठाईये आप भी अपनी लेखनी और इस विषय[illegible] अपने भाव (यदि किसी शास्त्र से लिये वचन हों तो [illegible] शास्त्र का नाम, पृष्ठ संख्या, अध्याय संख्या का स[illegible] उल्लेख अवश्य करें) २० मार्च २००५ तक प्रेम प्र[illegible] संदेश कार्यालय को भिजवायें.

-संपा[illegible]

प्रश्नोत्तर ज्ञान-मीमांसा

प्र.1 ईश्वर का अभिवादन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर-ईश्वर का अभिवादन वेदपाठ, पूजा पाठ, श्रद्धा-भक्ति एवं साष्टांग प्रणाम (भूमि पर पूरा लेटकर) करना चाहिए ! साष्टांग प्रणाम करने से गुरूजन-देवी-देवता व भगवान प्रसन्न होते हैं,पूरा झुकने से मन का अंहकार नष्ट होता है. शरीर भी हृष्ट-पुष्ट रहता है. विकार उत्पन्न नहीं होते है. भगवान या गुरूदेवके प्रति अनन्य श्रद्धा प्रकट होती है. अतः बड़ों को, भगवान को, गुरूजनों को प्रणाम करो तो साष्टांग (पूरा पेट के बल धरती पर लेटकर) प्रणाम करना चाहिए ।

प्र.2 मन्दिरों में शंख ध्वनि क्यों की जाती है ?

उत्तर-शंख ध्वनि से पूर्ण रूप से धार्मिक आस्था प्रकट होती है. अथर्ववेद में कहा गया है कि जहां शंख ध्वनि होती है वहां के आस-पास का क्षेत्र दुष्ट आत्माओं से दूर हो जाता है. शंखनाद से हमें पता चल जाता है कि किसी मन्दिर में पूजा-पाठ आरती हो रही है.

वैज्ञानिक दृष्टि से शंख ध्वनि करने वाले व्यक्ति को दमा की बीमारी, श्वास रोग, फेंफड़ो का रोग आदि बीमारीयां नहीं होती. जो व्यक्ति या बालक बोलने में अटकता (हकलाना) है वह शंख को बार-बार फूंके तो हकलाना भी कम हो जाता है. शंख में पड़े जल को छिड़कने से पवित्रता आती है. मंत्र उच्चारण कर शंख का जल छिड़कने से चहुं और का वातावरण व सभी वस्तुएं पवित्र हो जाती हैं. मन भी आनंदित व पवित्र हो जाता है.

प्र.3 भगवान को प्रसाद भोग क्यों चढ़ाते हैं ?

उत्तर-प्रभु की कृपा से जो कुछ भी अन्न जल हमें प्राप्त होता है. उसे प्रभु का प्रसाद मानकर प्रभु को अर्पित करना, कृतज्ञता प्रकट करने के साथ मानवीय सद्गुण भी है. भगवान को भोग लगाकर ग्रहण किया जाने वाला अन्न दिव्य प्रसाद माना गया है. भगवान को प्रसाद चढ़ाना आस्तिक गुण परिलक्षित करना है. जो कोई भक्त प्रेम पूर्वक फूल-फल अन्न जल आदि अर्पण करता है उसे मैं प्रेम पूर्वक सगुण रूप में प्रकट होकर ग्रहण करता हूं. भक्त की भावना हो तो भगवान एक बार नहीं बल्कि अनेक बार उपस्थित होकर भोजन ग्रहण करते हैं. प्रमाण स्वरूप शबरी-द्रोपदी विदुर सुदामा-भीलनी आदि. भगवान ने प्रेम पूर्वक उनके यहां भोजन किया.

प्र.4 आजकल जो लोग भगवान के समक्ष भोजन रखकर भोग लगाते हैं. तो भगवान खाते हैं या नहीं ? जो हम भोजन रखते हैं तो घटता क्यों नहीं ?

उत्तर-भगवान भोजन सभी का स्वीकार करते हैं. किन्तु हमें दिखाई नहीं देता, भगवान सूक्ष्म रूप से भोजन प्रसादी ग्रहण करते हैं. जैसे भंवरा पुष्प में बैठकर सुगन्ध व रस लेता है. जिससे पुष्प का वजन भार आकार घटता नहीं. वैसा का वैसा दिखाई देता है. ऐसे ही भगवान भी भोजन की दिव्य सुगन्ध और भक्त के प्रेम से ही तृप्त हो जाते हैं. भोग (प्रसाद) घटता नहीं है. भाव के भूखे हैं भगवान. **कौन कहता है खाते नहीं-कर्मा के तरह तुम खिलाते नहीं..**

प्र.5 परमात्मा एक है या अनेक ?

उत्तर-परमात्मा एक होते हुए भी अनेक रूपों में दिखाई देता है. ब्रह्मा-विष्णु-शिव-इन्द्र-यम-दुर्गा आदि परमतत्व परमात्मा के अनेक नाम हैं. जैसे मिट्टी से अनेक बर्तन बनते हैं उनके नाम भी अलग-अलग होते हैं किन्तु है वो मिट्टी! ऐसे सोने के भूषण, रूई से वस्त्र इसी प्रकार परमात्मा सर्वत्र व्यापक है. वे भिन्न-भिन्न रूपों में हमें दिखाई देते हैं. सामान्य दृष्टि से हम उन्हें देख व समझ नहीं पाते. उनके दर्शनों के लिए दिव्य दृष्टि की आवश्यकता पड़ती है. अर्जुन भगवान के पास रहते थे किन्तु युद्ध में भगवान ने जब विराट रूप दिखाया. तब भगवान ने अर्जुन को दिव्य दृष्टि प्रदान की. युद्ध में अनेक योद्धा थे पर दिव्य दृष्टि द्वारा भगवान का विराट स्वरूप अर्जुन ही देख पाये.

संकलन-कमलेश गुरूनानी, जयपुर

युवा अवस्थामें ज्ञान

लोग अक्सर कहते हैं कि सत्संग, ध्यान, ज्ञान, भजन आदि ये सब तो बुढ़ापे में करने की चीज है, न
उम्र तो संसार का सुख लेने के लिये है. परन्तु सच पूछो तो संसार का सच्चा सुख भी वही ले सकता है, जिस
उस सुखस्वरूप परमात्मासे मुलाकात हो जाय. उसको संसार की प्रत्येक घटना आनन्दसे भरी हुई दिखाई देती

बुढ़ापे में तो रोग और कष्ट शरीर को घेर लेते हैं फिर तो शरीर का ही भजन होता है परमात्मा का नह
जिसने जवानी में भगवान को याद न किया वह बुढ़ापे में कैसे याद करेगा तब तो वह अपनेसे ही खफा होता

स्वामी विवेकानन्द कहते थे कि भगवान को ताजे फूल पसन्द हैं जिनको किसी ने सूंघा न हो, जो मुरझ
न हों ओर हमारे नवयुवक ही वो ताजे पुष्प हैं जो भगवान को प्रिय हैं. भगवान राम ने जवानी में ही योग वशि
सुना और फिर सारे कर्म किये, सीता से विवाह किया, राक्षसों का वध किया, संतों की रक्षा की. शुकदेव, सनक
ऋषि, नारद, प्रह्लाद, ध्रुव, शंकराचार्य, गुरू नानक, कबीर, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी अखण्डानन्द
स्वामी टेऊँरामजी, स्वामी सर्वानंदजी, स्वामी शांतिप्रकाशजी, स्वामी हरिदासरामजी आदि अनेक महापुरूषों ने जव
में ही ज्ञान प्राप्त किया. रामकृष्ण परहमहंस कहा करते थे कि नई उम्र के लड़कों को परमार्थ के पथ पर ले च
का प्रयत्न करना चाहिये क्योंकि उनके हृदय पर अभी राग, द्वेष, काम, क्रोध की कालिख नहीं लगी है. एक
भी हृदय पर काम क्रोध रूपी विकराल राक्षस की छाया पड़ जाय तो उसे परमार्थ पथ पर लाना अत्यन्त दूभर
मुश्किल हो जाता है. कौन जानता है कि किसकी मृत्यु कब आ जायेगी, इसलिये युवा अवस्था में ही धर्म, भ
और ज्ञान का पथ अपनाकर इस मनुष्य जन्म को सफल करना चाहिये. और जो लोग बूढ़े हो चुके हैं वे तो
से एक ही प्रार्थना करें कि-**अब प्रभु कृपा करहु एहि भांति, सब तजि भजन करहु दिन राति**.

स्वाध्याय

धर्मग्रन्थ वह ज्योति है जिनको पढ़ने से हृदय में प्रकाश होता है, अज्ञान का अन्धकार दूर होता है, शंकाओं का समाधान होता है, मन में शुभ विचार आते हैं, अन्तःकरण शुद्ध होता है.

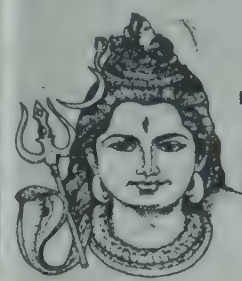
इस विषय में हम बड़े भाग्यवान हैं जो हमारे यहां गीता, भागवत, रामायण, उपनिषद, वेद, पुराण, गुरूग्रन्थ साहब, प्रेम प्रकाश ग्रंथ आदि महान ग्रन्थ हैं. हमें प्रतिदिन उनका स्वाध्याय करना चाहिये. सद्ग्रन्थों का अध्ययन करने से घर परिवार में शांति और सद्भावना रहती है. सुख और शांति का मार्ग मिलता है. भगवान के प्रति प्रेम बढ़ता है. महात्मा गांधी तो गीता अक्सर अपने साथ रखते थे, वे कहते थे कि जब भी मेरा मन उदास होता है या कोई उलझन होती है तब मैं गीता माता की शरण में चला जाता हूं. और मुझे सहज समाधान प्राप्त हो जाता है.

गीता में भगवान ने कहा है धर्म क्या है और अधर्म क्या है इसके विषय में शास्त्र ही प्रमाण हैं. क्या ठीक है और क्या गलत है इसका पता शास्त्र से ही मिलता है. शास्त्र और अच्छी पुस्तकों के माध्यम से ही हम महापु
से बात कर सकते हैं उनके अनुभव जान सकते हैं
अपने दुर्लभ मनुष्य शरीर को सफल बना सकते हैं.

हर घर में यह नियम बनाना चाहिये कि हम प्रति
के कार्यों से समय निकालकर रोज किसी ग्रन्थ का
करेंगे. रात में या सुबह परिवार के सभी सदस्य एकत्र ह
एक जगह बैठें और किसी सदग्रन्थ का पाठ करें. १५ मि
या आधा घण्टा इस कार्य के लिये अवश्य निकालें.

किसी से कहो तो वह यही कहता है कि भाई स
इतना समय ही कहां है जो हम ग्रन्थ पढ़ें, सांस लेने की
फुर्सत नहीं है. ऐसा कहने वाले वे ही लोग हैं, जो पैसे
बड़ा किसी को नहीं मानते, जिनके लिये दुनियां का
भोग ही सब कुछ है. वे अखबार पढ़ने के लिये स
निकाल लेते हैं, टी.वी. देखने के लिये समय निकाल लेते
दोस्तों से फालतू बातें करने के लिये समय निकाल लेते
केवल एक ये ही काम ऐसा है जिसके लिये उनको
नहीं मिलता. ये तो आप स्वयं से ही पूछें कि यह स
या नहीं?

-दिलीप देवनानी, अ



महाशिवरात्रि व्रत का महत्व

जो सत्य है, सुन्दर है और निरन्तर है वही शिव है. वर्तमान समय में भोले शंकर की उपासना करना सब प्रकार से हितकर है. शिवजी बड़े आशुतोष हैं. वह उपासक पर जल्दी रीझ जाते हैं. शिवजी मनोवांछित वरदान देनें में जरा भी नहीं हिचकते हैं, इसलिए उन्हें भोलेनाथ भी कहा जाता है. गोस्वामी तुलसीदास ने विनय पत्रिका में लिखा है.

बावरो रावरो नाह भवानी, जगत मातु मुस्कानी.

अर्थात् ब्रह्माजी लोगों का भाग्य बदलते-बदलते जब परेशान हो गये तो वे पार्वती जी से कहते हैं कि हे भवानी ! महेश्वर सदैव सबको देते ही रहते हैं. जिन लोगों को लेने का कुछ भी अधिकार नहीं है, उन्हें भी वें सबकुछ दे डालते हैं. इससे वेद की मर्यादा भंग होती है. अगर वे इसी तरह दान देते रहे तो एक दिन सबकुछ खाली हो जायेगा. जिन लोगों के भाग्य में मैंने सुख का नाम नहीं लिखा था, उन कंगलों के लिए भी स्वर्ग सजाते - सजाते तंग आ गया हूं. आप कृपा करके लोगों का भाग्य लिखनेका कार्य किसी और को सौंप दे.

विधाता की ऐसी बातें सुनकर महादेव जी मन ही मन प्रसन्न हुए और जगत जननी मुस्कराने लगी.

इस उद्धरण से यही ज्ञात होता है कि शिव अतिदानशील है. वे भक्तों की उपासना से शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं. शिव ही सृष्टि के उत्पन्नकर्ता है वे ही अनादि-अनंत-नित्य-निर्विकार-अज-सर्वज्ञ-अविनाशी -सर्वोपरि-सर्वगुणाधार-सर्वशक्तिमान सनातन देव है. शिव की लीलाएं अपरम्पार है.

शिवरात्रि का महत्व– शिव रात्रि विषय में शिव पुराण में एक व्याध की कथा का वर्णन आता है.

कैलाश पर्वत पर विराजमान शिव को प्रसन्न देखकर ब्रह्मा, विष्णु और पार्वती ने उनसे पूछा था. हे शिव! आप किस व्रत से संतुष्ट होकर भोग और मोक्ष का दान करते हैं.

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए शिव ने कहा- हे देववृन्द! भोग और मोक्ष दोनों को प्रदान करने वाले वैसे तो मेरे अनेक व्रत हैं किन्तु उन सब में दशव्रत मुख्य है. वेदों के पारगामी जवाल आदि ऋषियों ने भी यही दशव्रत प्रमुख कहे हैं. हे विष्णु! यह व्रत सकाम तथा निष्काम मनुष्यों के चारों वर्णों तथा चारों आश्रमों, स्त्री, पुरूष, बालक, वृद्ध सभी के लिए धर्म का श्रेष्ठ साधन माना गया है. हे केशव ! शिव चतुर्दशी के दिन प्रातःकाल के समय से लेकर जो भी कर्तव्य पालन करने चाहिए, उन्हें अब मैं तुमसे कहता हूं- धर्मवान मनुष्य को प्रातःकाल में शिवरात्रि के दिन स्नान आदि कर्म करके, भगवान शिव का पूजन करना चाहिए. अन्त में नमस्कार करते हुए यह कहें-

हे देवाधि देव ! नीलकण्ठ ! आपको मेरा शत्-शत् प्रणाम है. मैं आपके इस शिवरात्रि व्रत को करने की इच्छा करता हूं. हे देवेश! मेरी प्रार्थना है कि आपके प्रभाव से, मेरा यह व्रत निर्विघ्न पूर्ण हो जाए. काम क्रोधादि महाशत्रु मुझे पीड़ा न दे.

इस विधि से संकल्प करके, पूजन की सारी सामग्री एकत्रित करें. शास्त्रों में प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंगों की सुरम्य स्थल में स्थापना करनी चाहिए.

शिव पुनः कहते हैं-हे विष्णु ! शिव के श्रेष्ठ भक्तों को किस प्रकार, प्रत्येक प्रहर में विशेष पूजन करना चाहिए. प्रथम प्रहर में संस्थापित पार्थिव शिवलिंगों का अनेक प्रकार से पूजन अर्चन करे. पूजन के द्रव्यों के समर्पण के बाद जल की धार चढ़ानी चाहिए. इस समय ओम नमः शिवाय मंत्र का जाप करे. इसी पंचाक्षरी मंत्र से निर्गुण एवं सगुण स्वरूप शिव का पूजन करना चाहिए. शिव का पूजन सुन्दर चंदन, अखण्डित अक्षत एवं काले तिलों से करना चाहिए. कमल के एक सौ दस और कनेर के पुष्प अर्पित करे. शिव के आठों नाम-भव, शर्व, रूद्र, पशुपति, महान, भीम, उग्र, ईशान आदि नाम लेकर पुष्प अर्चन करें. दूसरे प्रहर में द्विगुण मंत्रो का

जाप करना चाहिए. नैवेद्य के रूपमें नींबूका अर्ध्य और खीरका अर्पण करना चाहिये. तीसरे प्रहर में पूर्ववत् कर्म करें, पुष्प आक का अर्पण करे. अनार का अर्ध्य तथा सुआ का नैवेद्य दे तथा कर्पूर से शिव की आरती करके, द्विगुण मंत्र का जाप करें.

चौथे प्रहर की पूजा भी शंख, पुष्प और बिपल्व पत्रों की सहायता से करे. उसके बाद मंत्र का जाप, सूर्योदय तक करे. सूर्य के उदय होने पर स्नान करके पुनः शिव की अर्चना करे तथा यथाशक्ति ब्राह्मण सन्यासियोंको भोजन कराके भेंटदे और यह प्रार्थना करें.

हे कृपानिधि ! मैं आपका हूं, आपके ही प्राणों तथा चित्त वाला हूं. मैं यही चाहता हूं कि मेरे कुल में सर्वदा आपका भजन,पूजन होता रहे. मैं कभी भी ऐसे वंश में न रहूं जहां आपके नामका संकीर्तन न होता हो.

महाकाल की उपासना का महत्व– भगवान शंकर को तीन नेत्रों वाला कहा गया है और वेद में उनके स्वरूप की उपासना करते हुए कहा गया है, हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं. हम सुगन्धियुक्त और पुष्टि प्रदान करने वाले उर्वारूक की तरह मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाएं अमृत से नहीं. तीन नेत्र वाले ईश्वर की उपासना के उद्देश्यसे ही बंधन मुक्त हो जाता है. मृत्यु मात्र शरीर के क्षय हो जाने का नाम नहीं है, अपितु इ[स] अर्थ कुछ और है. हम साधारणतः इस पंचभौतिक श[रीर] के आत्मा के जुड़े रहने को ही जीवन मानते हैं.

जब मानव का स्थूल शरीर नष्ट हो जाता है वह इथरिक शरीर (छाया शरीर) धारण कर लेत[ा] तथा विभिन्न लोकों में विचरण करता रहता है. इथ[रिक] शरीर जब तक पंचभौतिक शरीर में बना रहता है तक प्राण वायु का प्रवाह शरीर में चलता रहता जैसे-जैसे इथरिक शरीर का वियोग होता रहत[ा] वैसे-वैसे ही भौतिक शरीर में निर्बलता आती जा[ती] तथा पूर्ण वियोग हो जाने पर शरीर नष्ट हो जाता इसी इथरिक शरीर के वियोग को मृत्यु कहते हैं.

रूद्राक्ष और शिव–शिव पुराण और स्कन्द पुरा[ण] रूद्राक्ष के महातम्य और धारण करने की विधि वर्णन किया गया है. रूद्राक्ष को साक्षात् शिव स्[वरूप] कहा गया है. रूद्राक्ष शिव को अत्यन्त प्रिय है.

इसके पवित्र दर्शन, स्पर्श एवं जय से सारे का विनाश होता है. सर्वप्रथम भगवान शिव ने लोकोप[कार] की भावना से भगवती के समक्ष रूद्राक्ष की महिम[ा] वर्णन किया था. संकलन-हीरालाल भूरानी, खै[...]

अनेक नामों से जाने जाते हैं भगवान शिव

भगवान शिव के अनेक नाम व स्वरूप देखने सुनने को मिलते है. जग से अतीत-नंग दड़ंग, ओदरदानी, बाबा भोलेनाथ की लीलाएं भी अद्भुत है. श्मशानों में रहना मृग छाल व भस्म शरीर पर धारण करना, खोपड़ी व सर्पों की माला, बैल पर सवारी, हाथ में कपाल, विषपान करना, बड़ी बड़ी जटायें आदि जग से निराले थे भोले भाले भगवान शिव !

जिस पर प्रसन्न हो जाये उसे सबकुछ दे देते हैं. जो जिस भाव से उनकी भक्ति करता है उसे वरदान स्वरूप सर्वस्व दे देते हैं. पार्वती के कहने अनुसार एक सोने की लंका का निर्माण करवाया. पर वह भी रावण जैसे ब्राह्मण को दान में दे दी. भस्मासुर को कड़ा [...] स्वयं आफत मोल ले ली. चौदह रत्नों में निकला [...] हलाहल स्वयं पानकर गये. ऐसे अद्भुत थे भोले ब[ाबा]

अगर उनके नामों को देखें तो वह त्रिनेत्र[धारी] त्रिशूलधारी, ओंकारेश्वर, विश्वेश्वर, घण्टेश्वर, चमत्कारे[श्वर] मनोकामेश्वर, जंगलेश्वर, रामेश्वर, गोपेश्वर आदि [...] से प्रसिद्ध भगवान शिव. इन नामों से जुड़े अनेक [...] भी देखने-सुनने को मिलते हैं.

भगवान गोपेश्वर

भगवान कृष्ण ने जब ब्रज भूमि पर अवतार [...] तो अनेक गोप-ग्वालों के संग रास रचाई. एक [...] ब्रजमण्डल में कृष्ण भगवान गोपियों के संग इस मण्ड[ल] रास खेल रहे थे. इस अद्भुत रास क्रीड़ा को देख[ने] लिये सभी देवी-देवता आये. भगवान शिव के म[...]

आया कि मैं भी कृष्ण रासमण्डल में गोपी बनकर रास खेलूं. भोले बाबा ने अपना स्वरूप गोपी का बना लिया. साड़ी पहन ली. घूंघट ढक लिया जिससे कोई पहचान न पाये. अब वे भी गोपी के संग मिल गये. हाथ में डांडिया लेकर नृत्य करने लगे. नृत्य भी गोपियों से भिन्न.लम्बे कद की गोपी कुछ अलग ही दिखाई दे रही थी, पर भोले बाबा को तो कृष्ण भगवान से रास जो खेलनी थी. न देखा कद और न देखा अपना नृत्य. मस्तीमें मस्त होकर झूम रहेथे भगवानशिव.

रास करते-करते वे पहुंचे भगवान कृष्ण के समक्ष! भगवान कृष्ण तो पहचान गये थे. डांडिया बन्द करके फिर हाथ से फेरे लगाकर रास लीला होने लगी. जैसे ही भगवान कृष्ण के हाथ से हाथ मिलाया तो कृष्ण भगवान ने भोले बाबा से पूछा. ये कैसा रूप बना रखा है. दोनों का आपस में स्नेह मिलन हुआ. कृष्ण भगवान ने कहा, आओ गोपी के रूप धारण करने वाले गोपेश्वर भगवान शिव. तभी भगवान शिव का नाम गोपेश्वर पड़ा. वृन्दावन में आज भी गोपेश्वर भगवान का मन्दिर प्रसिद्ध है.

भगवान घण्टेश्वर बाबा

एक गरीब ब्राह्मण ने भगवान शिव की आराधना की. भगवान ने प्रसन्न होकर एक मन्दिर का घण्टा दे दिया और कहा इस घण्टे से तुम जो भी मांगोगे वह तुम्हें मिल जायेगा. एक बात का ध्यान रखना जो वस्तु तुम्हें एक मिलेगी वो पास वालों को दुगुनी मिलेगी.

ब्राह्मण घण्टेको घर ले गया. मनमें सोचने लगा तपस्या मैंनेकी,फल मिलेगा दूसरोंको.चिन्तामें डूब गया. काफी समय तक घण्टेको उसने एकस्थान पर रख दिया.

कुछ समय बाद बहुत अधिक दरिद्रता आ गई तो उसने आवश्यकतानुसार घण्टेश्वर बाबा से प्रार्थना करके वस्तुऐं प्राप्तकर ली.जो भी आवश्यकता होती तब ब्राह्मण घण्टेसे प्रार्थना करता-हे घण्टेश्वर बाबा मुझे ये वस्तु चाहिए वह शीघ्र प्राप्त हो जाती पर आस-पास वालों को दुगुनी वस्तुऐं मिलती. ब्राह्मणसे ये देखा न गया.

एक दिन ब्राह्मण ने गुस्से में आकर घण्टेश्वर बाबा से कहा मेरी एक आंख एक हाथ-पैर टूट जाये. बस इतना कहना था कि आस-पड़ोस वाले अंधे लूले हो गये. अर्थात् जीवन में कभी भी किसी का बुरा न करना चाहिए. दूसरे के सुख को देखकर ईर्ष्या में नहीं जलना है. जितना भगवान दे उसमें संतुष्टि रखनी चाहिए. ऐसे ही हर मनोकामना पूर्ण होने लगी. तभी से घण्टे से प्राप्त वस्तुओं के कारण घण्टेश्वर बाबा के नाम से प्रसिद्ध हुए बाबा भोलेनाथ.

ओंकारेश्वर

उज्जैन नगरी के समीप ओंकारेश्वर नगरी में चारों और पहाड़ियां ओम आकार की बनी हुई है. पहाड़ी के नीचे पवित्र नर्मदा नदी व बीचों-बीच छोटी सी गुफा में विराज रहे भोले बाबा. उन्हीं ओम आकार की पहाड़ियों के बीच में दर्शन देते हैं भोलेबाबा. तभी से वहाँ मन्दिर का नाम पड़ा ओंकारेश्वर. गुरूकृपा, अमरापुर स्थान, जयपुर

भगवान महाकालेश्वर महिमा

मध्यप्रदेश का उज्जैन नगर भारत के प्राचीनतम धार्मिक नगरों में से एक है.जो कालों के भी काल महाकालेश्वर का नगर कहलाता है. इस नगर के धर्मिक आस्था के कारण ही मध्यप्रदेश शासन ने मांसाहार पर रोक लगा दी.

उज्जैन नगर में प्राचीनकाल में राजा चन्द्रसेन राज्य करते थे.वे बड़े ही शिवभक्त थे शिव भक्ति को कारण ही भगवान शिव के पार्षद मणिभद्रजी राजा के मित्र बन गये थे. उन्होनें राजा की शिव भक्ति से प्रसन्न होकर चिन्तामणि नामक महामणि प्रदान कर दी थी. जो कौस्तुभ मणि के समान देदीप्यमान थी. चिन्तामणि को गले में धारण करके राजा जब सिंहासन पर बैठते थे, तो भगवान सूर्य नारायण के समान शोभा पाते थे. इसी मणी के कारण ही कोई भी अन्य राजा उनके राज्य पर चढ़ाई करने का साहस ही नहीं कर पाता था.

आस पास के कई राजाओं ने इनपर अकेले अकेले कई बार आक्रमण किये परन्तु शिवभक्त चन्द्रसेन के सामने एक न चली सभी पराजित होकर बैठ गये सभी इनसे दुश्मनी मानने लगे अब आपस में सभी राजाओ ने विचार कर चिन्तामणि प्राप्त करने के लिये एक साथ चारों तरफ से उज्जैन को घेर लिया, राजा को जब ज्ञात हुआ तो उन्होंने भगवान महाकाल की शरण ली और उनके पास आकर पूजा करने बैठ गये, जब वे पूजा कर रहे थे तब एक विधवा ग्वालिन अपने छः सात वर्ष के बालक के साथ पूजा देखने

खड़ी हो गयी. ग्वालिन का बालक पूजा विधि को बड़े ध्यान से देखने लगा. ग्वालिन अपने बालके साथ घर आयी. उसकी छोटी सी झोपड़ी थी वह उसमें जाकर अपने लिए ओर बालक के लिये भोजन बनाने लगी. बालक घर से निकल आया और घर से थोड़ी दूर पर जाकर उसने एक पत्थर उठाया जो गोल और चिकना सुन्दर था. उसने उस पत्थर को धरती माता के स्थान को साफ करके रखा और उस पर आसपास के सुन्दर फूल पत्तियां चढ़ाकर उनके पास ध्यान में बैठ गया वहां उसने मनोमयी धूप अगरबत्ती भी लगायी, क्योंकि उसके पास धन तो था ही नहीं कि वह पूजा सामग्री खरीद कर लाता. गोप बालक ने भगवान शंकर के परम पावन महामन्त्र ओम नमः शिवायः का जाप आरम्भ कर दिया. वह ध्यान में इतना मगन हो गया कि उसे भगवान शिव के अलावा ध्यान में कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था.

जब ग्वालिन ने भोजन तैयार किया तब बालक को भोजन के लिये आवाज लगायी लेकिन उसकी आवाज को सुने तो कौन. उस बालक का कोई जवाब न आया. माता ने कई बार बुलाया लेकिन बालक नहीं आया अब माता से रहा न गया और सोचने लगी बालक को साथ लायी थी, ना मालूम कहां चला गया है अब कुटिया के बाहर आयी तो बालक को थोड़ी दूर पर पालथी मारकर ध्यान में बैठे देखा वह क्रोधित होती हुई बालक के पास आयी और उसे फटकार कर आवाज दी. चल भोजन करले.लेकिन फिर भी बालक वहां से नहीं उठा तब माता और अधिक क्रोधित हुई और पत्थर के बने शिवलिंग को उठाकर एक तरफ फैंक दिया. परन्तु माता को क्या मालूम था कि बालक भगवान शंकर की भक्ति में इतना तल्लीन हो गया है. जैसे ही माता ने शिवलिंग को फैका तो बालक के हृदय से शिवका रूप भी लुप्त हो गया जिसका हृदय में वह आनन्द ले रहा था. बालक बड़े जोर जोर से आर्तनाद करने लगा, रोते रोते मूर्छित हो गया. मेरे शिव कहां चले गये बालक का यह रूप देखकर माता भी विलाप करने लगी और वह भी अचेत होकर गिर पड़ी.अब भगवान महाकालेश्वर ने बालक पर कृपा की, अपना हाथ उसके मस्तक पर रखा. जैसे ही बालक ने नेत्र खोले तो वह भगवान महाकालेश्वर के मन्दिर में था. जो उसने फूल पत्तियां पत्थर के शिवलिंग पर चढ़ाई थी वही फूल पत्तियां भगवान महाकालेश्वर पर विद्यमान थीं. बालक देखकर आश्चर्यचकित हो गया उस भगवान के मन्दिर की शोभा ही निराली थी. वहां पर स्तम्भों पर हजारों मणियों की चमक थी जिससे मन्दिर सूर्य के समान चमक रहा था. बालक वहां से उठा ओर अपनी माता जी को बुलाने कुटिया में गया तो वहां क्या देखता है कि वहां माता जी एक बहुत बड़े राज जैसे महल में पलंग पर सोई हुई हैं. उसने माता को बड़े प्रेम से जागृत किया तब माता भी देखकर आश्चर्यचकित र[ह] गयी कि हमारी कुटिया कहां गयी यहां महल कैसे बन गय[ा] यह तो भगवान महाकालेश्वर ने हमारे ऊपर असीम कृप[ा] की है. वह दौड़ती हुई महाराज को समाचार सुनाने गयी महाराज वहां आये और बालक पर भगवान शिवकी कृप[ा] देखकर बड़े ही प्रसन्न हुये उनके नेत्रोंसे प्रेमाश्रु बह निकले.

राजा ने उस दिन भगवान शिव का बड़ा भारी उत्स[व] मनाया. उत्सव चल रहा था उधर जिन राजाओं ने उज्जै[न] को चारों तरफ से घेर रखा था, उनको उनके गुप्तचरों [ने] सूचना दी कि महाराज चन्द्रसेन के राज्य में तो बालक भ[ी] शिव भक्त है, उनके ऊपर भगवान महाकाल की असी[म] कृपा है ओर सारा वृतान्त कह सुनाया फिर क्या था सभ[ी] राजाओं ने एकत्रित होकर विचार किया कि जिस राज्य [के] बालक और राजा शिवभक्त है तो उन पर विजय प्रा[प्त] करना बड़ा ही कठिन कार्य है अब भगवान महाकालेश्वर [के] दर्शन करने चलते है और राजा से मित्रताकर लेते है. सभ[ी] राजा महाराजा चन्द्रसेन के पास चलने को तैयार हो ग[ये] और शिव भक्त राजा चन्द्रसेन को सूचना भिजवायी राज[ा] बड़ा प्रसन्न हुआ उन सबकी अगवानी के लिये नगर [को] खूब सजाया गया. सभी राजा नगर में आये भगवा[न] महाकालेश्वर के दर्शन किये और उस गोप बालक के घ[र] पर आये, उसकी शिवभक्ति देखकर सभी राजाओं ने उ[स] गोप बालक को गोपों (ग्वालों) का राजा नियुक्त कर दिय[ा].

उसी समय भगवान शिव के ग्यारहवें अवता[र] बजरंगबली हनुमानजी वहां साक्षत् प्रकट हो गये उन्हो[ंने] सभी राजाओं का महाराज चन्द्रसेन से मिलाप करवाया औ[र] उस गोप बालक को आशीर्वाद दिया कि आज से तेरा ना[म] श्रीकर होगा और तेरी आठवीं पीढ़ी में तेरे घर पर विष्[णु] अवतार भगवान श्री कृष्ण जन्म लेगें, तू भगवान का पि[ता] बनेगा तभी तेरा मोक्ष हो जायेगा.

संकलन-ओम प्रकाश वलेचा, टूण्ड[ला]

भजन

थलु :- मेरे सत्गुर टेऊँराम प्रभू
इस दास के घर में आ जाना
जो रूखा सूखा दिया हमें
कभी उनका भोग लगा जाना

1. मेरे घर में कोई बिछोना नहीं
तेरा आसन कैसे सजाऊं मैं
कोई टूटी फूटी खाट नहीं
जिस जगह पै तुमको बिठाऊं मैं
मैं श्रद्धा नैन बिछाय खड़ा
मेरी अर्जी को ना ठुकराना

2. मेरा सभ ने छोड़ा साथ प्रभू
और अपनो ने मुंह मोड़ दिया
टूटे रिश्ते नाते सारे
इक तुम से नाता जोड़ दिया
व्याकुल है दुख में मन मेरा
मेरे मन को धीर बंधा जाना

3. तुम हो भाग्य बनाने वाले
मैं तो किस्मत का मारा हूं
कर दो कृपा मुझ पर सत्गुर
मैं दीन हूं और दुख्यारा हूं
मेरे दोषों को ना देख प्रभू
अपनी रहमत बरसा जाना

4. जयदेव की विनती है सत्गुर
मुझे अपनी शरण में ले लेना
इक ख्वाहिश है मेरे मन में प्रभू
मुझे अमरापुर में बुला लेना
जब निकले अन्तिम स्वांस मेरी
तब आके दर्श दिखा जाना

संत जयदेव, प्रेम प्रकाश धाम, दिल्ली

तर्ज :- घर घर में तस्वीर दिसां थो

थलु :- जगमग जग में जगे थीं ज्योति
स्वामी टेऊँराम जी
अजु भी हरहंधि हले थीं टुकिड़ी
स्वामी टेऊँराम जी

1. जोगिनि जित वेही जोगु कमायो
सो अमरापुर धाम आ
सुर नर भी तहिं दर्शन चाहिनि
जनमु खंडूअ जो गामु आ
नर नारी सभु महिमां गाइनि
सन्त सच्चे सुखधाम जी

2. धनु धनु माता कृष्णा हुयड़ी
धनु पिता चेलाराम आ
ज्ञान ध्यान हुई निर्मल भक्ती
धनु गुरू आसूराम आ
कथिनी करिनी रहिणी रहिबर
सालिक सन्त सुजान जी

3. त्याग तपस्या सहन शीलता
ज्ञान गुणनि जी खाणी
वृत्ति गुर वचननि में धारे
बोलियाऊं अनुभव बाणी
प्रेम प्रकाशी पंथु बणाए
राह दसी आरामजी

4. सन्त सच्चारा जग जा उज्याला
अमर आहिनि संसार में
न्यारा थीं निरलेप जगत में
सभ मां खणनि था सार खे
हरि सिमरे हर जाइ दिठाऊं
सूरत सा भगवान जी

संत हरिओमलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, ग्वालियर

प्रसंग–नई बहू एक धनवान घराने में आई जहां सब माया के नशे में डूबे हुए थे पर परमार्थ का ख्याल नहीं था. उसको सब घर वालों के लिए दर्द था और वह अपने हर शब्द से किसी भी तरह उनका विवेक जगाना चाहती थी. एक दिन द्वार पर एक संत आया. उसने पुकार कर कहा, भिक्षा दो. नई बहू ने कहा, अभी का तो हमारे पास नहीं है, पहले की कमाई खाते हैं. फिर संत ने कहा, आपके घर में कोई है? बहू ने कहा–मर्द है पर वह एक ही वर्ष का है. सास छः महीने की है और श्वसुर जी का तो अभी तक जन्म ही नहीं हुआ है. संत उसकी अटपटी बातें समझ गया.

सिद्धान्तः– पहले की कमाई का अर्थ है प्रारब्ध. मर्द एक साल का है मतलब ज्ञानमय जीवन एक साल से अपनाया है. सास ने छः महीने से सत्संग जाना शुरू किया है और श्वसुर को अभी तक धर्म में रूचि ही नहीं है.

सूर्योदय से पूर्व उठना है तंदुरूस्त रहना

खरी-खरी बातें : मुझे यकीन हो गया है कि बीमार को तंदुरूस्त करने में दवा के बजाय नेचर (प्रकृति) ज्यादा काम करती है. इसीलिए हमको कुदरत की गोद में ही जाना अच्छा है. ज्यादा मिठाइयां, ज्यादा प्लेटों से हमेशा परहेज करना चाहिए. जख्म या कुदरती बीमारी के सिवाय डाक्टर से सलाह लेना अपना अपमान है.

मुझे दिलखुश रहना पसंद है मगर लाखों करोड़ों रूपये की आमदनी वाली सम्पत्ति का मालिक बनकर भी उदास रहना पसंद नहीं. हमें हमेशा खुश रहना है. ज्यादा खाने से मरने वालों की तादाद कम खाने से मरने वालों के मुकाबले बहुत ज्यादा है इसीलिए कम खाओगे तो सुखी रहोगे.

मजबूत बनने के फायदे इन्सानी जिंदगी में है वरना बीमारी में बीमार तड़पता क्यों है मर क्यों नहीं जाता. स्पष्ट है कि जिस्म में जिंदा रहने की ताकत बीमारी में भी होती है. वही ताकत क्या तंदुरूस्ती में ज्यादा न बढ़ेगी. अगर आप नहीं बढ़ाते तो आप नासमझ हैं. प्रकृति के अनुरूप चलने वाला इंसान लम्बी आयु और पूर्ण तंदुरूस्ती प्राप्त कर सकता है. तम्बाकू से फेफड़े दिल और नसें कमजोर होकर निष्क्रिय हो जाती हैं इसीलिए तम्बाकू का सेवन नहीं करें.

आसमान के परिंदों को देखो कितने तेज फुर्तीले सेहतमंद और सुखी हैं न उन्हें डाक्टरों की तलाश है और ना उन्हें दवादारूकी खबर. फिर भी इन्सानों से वह ज्यादा स्वस्थ और सुखी हैं. वह साफ हवा से ठीक होते हैं और भूख लगने पर ही खाते हैं. हमारी तरह स्वादिष्ट पकवानों की इच्छा नहीं करते बस अपनी मस्ती में मस्त रहते हैं. तमाम वे वस्तुऐं जिन पर इन्सान गर्व कर सकता है वह स्वस्थ शरीर से ही हासिल होती हैं.

बीमारी वक्त और पैसे को खत्म करती है, उससे आमदनी घटती है और खर्च बढ़ जाता है. यह हमारे घर परिवार हमारे मित्र बन्धु सब के लिए खतरनाक हो सकती है.

खुशी खाये हुये भोजन को शीघ्र हजम करती है और उसको अपने शरीर का हिस्सा बनाती है. गम और वहम भोजन को जहरीला करते हैं इससे शरीर में बदहजमी होकर शरीर को नुकसान पहुंचता है. यह नियम है कि भोजन करते वक्त आदमी का मन प्रसन्न हो और उसे किसी बात की चिंता या दुःखद विचार न हो. पूर्ण स्वस्थ रहने के लिए मनुष्य को खुश रहना चाहिए. जब तक सेहत और ताकत कायम है इन्सान को कोई गम नहीं हो सकता.अगर सेहत और ताकत जाती रही तो फिर जीवन भार स्वरूप होकर कष्टकारक हो जाता है. इसीलिए प्रबुद्धजनों का कहना है-कि तंदुरूस्ती हजार नियामत यानि तंदुरूस्ती व ताकत सब खुशियों की जननी है. जो मनुष्य अपनी जिंदगी को कामयाब बनाकर खुशहाल जिंदगी जीना चाहता है. उसका कर्तव्य है कि वह अपनी दिल दिमाग और शरीर तीनों की सेहत को कायम रखकर ताकत को बढ़ाने और सही तरीके से समझदारी और मेहनत से काम ले तो वह हमेशा खुश रहेगा.

प्रातः सूरज निकलने से पहले सो कर उठें और नित्यकार्य से निवृत होकर सहन योग्य शीतल जल से अच्छी तरह स्नान करने से तंदुरूस्ती अच्छी रहती है और दिल खुश रहता है, शरीर ताकतवर बनकर चेहरे की आभा और बदन की चुस्ती में वृद्धि होती है. इसीलिए कहा जाता है कि-

देर से सोये देर से जागे, किस्मत रूठे सेहत भागे

इसीलिए जरूरी है रात में जल्दी सोने को जा जिससे सबेरे जल्दी उठें. सबेरे उठने पर और भोजन करने के बाद हाथ के अंगूठे व उसके पास वाली अंगुली का गोलाकार बनाकर मस्तक के निचले हिस्से से दो तीन बार घिस देने से सर में होने वाली खराबियां और बीमारियां दूर होती हैं. प्रातः सोकर उठने के बाद और सायं को अंगूठे के पास वाली उंगली को कान में डालकर घिसना चाहिए, ऐसा करने से कान में किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं होती और कान में यदि कोई भी रोग है तो वह दूर होता है. आजमाकर देखें मगर विश्वास के साथ बाकी अगले अंक में.

-नारायणदास तेजूराम हेमराजानी, अमरावती

पुरीधाम में भी धूम मचेगी, सांईं टेऊँराम नाम की

मर्यादामूर्ति सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज का पावन जन्मोत्सव

बुधवार 18 से रविवार 22 मई 2005 तक

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता व प्रेम प्रकाश मण्डल के संतमण्डल की पवित्र उपस्थिति में मनाया जायेगा.

सूचना– श्री प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर द्वारा प्रेमी भक्तों को भविष्य में धीरे–धीरे करके चारों धाम यात्रा कराये जाने का विचार किया गया है. इसी कड़ी के अंतर्गत पवित्र जगन्नाथपुरी धाम में मेले का आयोजन किया गया है. इसी प्रकार अन्य धामों में भी आगामी समय में मेले आयोजितकर प्रेमियों को चारों धाम यात्रा संपूर्ण कराये जाने की योजना है. सो आप सबसे अनुरोध है कि जिन भी प्रेमियों को चारों धाम यात्रा करने की इच्छा हो तो वह पुरी धाम में पहुंचने का कार्यक्रम अवश्य बनायें. ऐसा परम सुयोग सद्गुरू–संतमण्डल का पुण्यमयी सानिध्य और भगवान के परम धाम के दर्शन का फल और क्या चाहिये भगवत् प्रेमियों को.

आगामी अंक में पुरीधाम मेले का सम्पूर्ण विवरण प्रकाशित किया जावेगा.

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में
विशाल निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

कार्यक्रम

जाँच व भर्ती : शनिवार 26 फरवरी 2005 प्रातः 9 बजे से

ऑपरेशन : रविवार 27 फरवरी 2005 प्रातः 10 बजे से

नेत्र विशेषज्ञ : डॉ.एम.एम.बसंल, डॉ.एस.के.नायर, डॉ.रमेश वाधवानी

इस शिविर में आंखों के विभिन्न रोगों की जांच व मोतियाबिन्द रोगियों को ऑपरेशन द्वारा लैंस प्रत्यारोपित किये जायेगें

संयोजक : श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल, श्री अमरापुर स्थान,जयपुर

जगन्नाथ पुरीधाम दर्शन के साथ समुद्र दर्शन भी

पुरी एक धाम एवं एक समुद्र तट

आध्यात्मिक क्षेत्रमें मनुष्य को लौकिक, दैविक और भौतिक तापों का शमन कर धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति ईश्वर के सानिध्य तक जाने का एक मार्ग है. श्री जगन्नाथ भगवान के दर्शन कर मनुष्य को अपार सुख की प्राप्ति एवं श्रद्धा का अनुभव होता है. अपना देश भारत तीर्थों का देश है.

ऐसा ही एक परम तीर्थ है जगन्नाथ पुरी. मनोहारी सूर्योदय एवं सूर्यास्तका बेहद सुन्दरतम दृश्य बरबस ही मानव को पुरी के समुद्र तट की ओर खींच लाता है. श्री जगन्नाथ भगवान का पवित्रतम एवं कलात्मक मन्दिर तथा भगवान जी की रथ यात्रा इतनी आनंददायक है कि पुरी में बिताए क्षणोंको कभी भुलाया नहीं जा सकता है.

चार धामों में से पवित्र पुरी धाम-जगन्नाथ पुरी चार धामों में से एक है यहां श्रद्धालु-भक्तगण बहुत दूर-दूर से भगवान जगन्नाथ जी के दर्शनार्थ आकर उनका आशीर्वाद लेते हैं. वर्तमान में तो भारतवर्ष के प्रत्येक नगर से पुरी को सीधी रेलें जाती हैं (विस्तृत जानकारी आप अपने निकटतम रेलवे स्टेशन से प्राप्त कर सकते हैं) भगवान जगन्नाथजी का पवित्र मन्दिर पुरीके रेलवे स्टेशन से १० कि.मी. की दूरी पर स्थित है.यह मन्दिर बहुत खूबसूरत एवं विशाल है. समूचे वर्ष यहां पर बड़ी तादादमें श्रद्धालु दर्शनार्थी आते रहते हैं.

भगवान जगन्नाथ मंदिर-भगवान जगन्नाथजी के मंदिर में भगवान बलरामजी, सुभद्रा एवं श्री कृष्णजी के श्रीविग्रह स्थापित हैं. इन श्री विग्रहों के यहां स्थापित होने के पीछे भी एक कथा है-

प्रचलित किवदंति-एक दिन वहां के राजा को स्वप्न आया कि प्रातःकाल तुम समुद्र किनारे जाना वहां एक काष्ठ तैरता हुआ मिलेगा. तुम उस काष्ठका विग्रह बनाओ और मंदिर में स्थापित करो. दूसरे दिन राजा समुद्र किनारे गया वहां उसने काष्ठ को तैरते हुए देखा. राजा ने वह काष्ठ उठा लिया और उसको श्रीविग्रह बनाने के लिए ले आया. विग्रह बनाने की एक शर्त यह भी थी कि मूर्तियां एक बार में ही बनना चाहिए और मूर्तियां बनाते समय कोई व्यवधान भी न हो. अतः राजा काष्ठ लेकर विग्रह बनाने के लिये बड़े कमरे में चला गया. विग्रह जब पूर्ण होने को आए तब अचानक किसी ने बंद कमरेके पाट खोलकर राजा के कार्य में व्यवधान पैदा कर दिया. उस समय विग्रह में सिर्फ हाथ जुड़ना ही शेष थे, जो कि बाद में अनेक प्रयत्न करने के बाद भी नहीं जुड़ पाए. इस विग्रह को स्थापित करने के लिए कोर्णाक में एक विशाल मंदिर बनाया गया था, चूंकि विग्रह पूरी नहीं हो सकी थी इस कारण विग्रह को समुद्र के किनारे ही रखा गया और कोर्णाक में सूर्य देवता की मूर्ति स्थापित कर दी गई, बाद में समुद्र किनारे रखी भगवान बलराम, सुभद्रा और श्री कृष्ण के श्रीविग्रह लोगों के आकर्षण और श्रद्धा का केन्द्र बने और पूरे भारत में इसकी मान्यता एक तीर्थ के रूप में हुई.

रथयात्रा-पुरी में प्रत्येक वर्ष भगवान जगन्नाथजी की रथ यात्रा निकलती है. रथयात्रा के पीछे भी एक कथा प्रचलित है. कहते हैं कि नारायण भगवान सात दिन के लिए अपनी मौसी के यहां जाते हैं. रथ सात दिन तक आगे की ओर खींचा जाता है ओर सात दिन हीं पीछे की ओर लाया जाता है. भगवान का रथ तब तक आगे नहीं सरकता, जब तक कि राजघराने का राजकुमार सोने की झाडू से रास्ता नहीं बुहारता है.

भोग-भगवान जगन्नाथजी के मन्दिर में प्रतिदिन टनो-टन भोग बनता है. भोग में खिचड़ी, खीर और सब्जी होती है. भोग हमेशा मिट्टी की हांडीयों में ही पकाया जाता है. यहां की विशेषता यह है कि भोग कभी कम नहीं पड़ता है. भगवान के अन्न भंडार के चावल प्रत्येक श्रद्धालु प्रसाद के साथ अपने घर भी ले जाते हैं. इन प्रसाद के चावलों की विशेषता यह है कि बड़े से बड़े भोज में यदि कोई इस भोग के चावलों को डाल देता है तो भंडार में कोई कमी नहीं आती.

समुद्र दर्शन-पुरी का जितना महत्व उसके मंदिर में है उतना ही महत्व उसके समुद्र किनारे का भी है. पुरी का समुद्र किनारा भारत के अनेक समुद्री किनारों में से एक माना जाता है. लाखों सैलानियों की भीड़ के बावजूद भी यह बहुत साफ और सुंदर है. यहां आकर सैलानी सब कुछ भूल जाते हैं. समुद्र की ऊंची-ऊंची लहरें सैलानियों का मन मोह लेती हैं. एक बार जो यहां आता है, वह बार-बार आने की इच्छा रखता है. सुबह के सूर्योदय को देखने लोग सुबह-सुबह ही समुद्र किनारे पहुंच जाते हैं. सुबह-सुबह बालू में नंगे पैर घूमना बहुत ही अच्छा लगता है. सुबह सबेरे यहां तमाम मछुआरे दिखाई देते हैं. जो समुद्र में जाल फेंककर मछलियां पकड़ते हैं और जाल में आए सीपों में से मोती इकट्ठे करते हैं. समुद्र से निकले मोती सैलानियों को बहुत ही ललचाते हैं.

पुरी के समुद्र किनारे सुबह से शाम तक के अलग-अलग नजारे देखने को मिलते हैं. सुबह समुद्र से उगता हुआ सूरज, समुद्री लहरों में समुद्र की ऊंची-ऊंची लहरों में किलोलें करते सैलानी और शाम को स्याह काले बादलों से ढका समुद्री किनारा. पुरी में आपकों जगह-जगह रेत को आकार देते हुए अनेक कलाकार मिल जाएंगे. रेत में चित्र बनाने वाले कलाकर अपनी जादुई उंगलियों का कमाल दिखाते हुए जीवंत चित्र बनाते हैं जो सैलानियों के आकर्षण का एक अलग ही केन्द्र होता है.

भुवनेश्वर दर्शन-पुरी के पास ही भुवनेश्वर है. यहां अनेक दर्शनीय स्थल हैं. कोणार्क सूर्य मंदिर, लिंगराज मंदिर, बौद्ध मंदिर, छउली, मुक्तेश्वर मंदिर एवं हाथी गुफा, उदयगिरी, खंडगिरी. पुरी से अनेक टूरिस्ट बसें भुवनेश्वर जाती हैं जो कि सैलानियों को सभी दर्शनीय स्थलों पर ले जाती हैं. टूरिस्ट बसें प्रातः ६ बजे चलती हैं और पूरा दिन घुमाते हुए शामको वापस पुरीमें लौट आती हैं.

सूर्य मंदिर-उड़ीसा का मुख्य दर्शनीय स्थल कोर्णाक सूर्य मंदिर है. यह उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर में स्थित है. सूर्य मन्दिर का चबूतरा बहुत विशाल है. इसकी भित्ति पर २१ चक्र हैं और सामने की ओर सूर्य देवताके रथके घोड़े हैं.मंदिरके अंदर भगवान सूर्य देवताकी मूर्ति स्थापित है.इस मंदिरकी विशेषता यह है कि सूर्यकी पहली किरण मन्दिरमें स्थित भगवान सूर्यकी मूर्ति पर पड़ती है.

बौद्ध मठ-भुवनेश्वर में बौद्ध मठ मन्दिर छउली है. यहां भगवान बुद्ध की विशाल प्रतिमा स्थापित है. कहते हैं कि जब सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध जीता था तब इसी स्थान पर खड़े होकर उसने युद्ध के मैदान में खून की बहती नदी देखी थी. खून की नदी देखकर उसके मन में विरक्ति पैदा हो गई तब उसने दृढ़ संकल्प लिया कि वह अब और युद्ध नहीं करेगा और उसने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया तथा इसी स्थान पर बुद्ध देव की विशाल प्रतिमा की स्थापना की.

जैन तीर्थ-उदयगिरि खंडगिरि खण्ड गुफाओं की एक विशाल श्रृंखला है यह हाथी गुफा के नाम से भी जानी जाती है. यह जैनियों का तीर्थ स्थल है. यहां के मन्दिर में महावीर स्वामी की प्रतिमा स्थापित है

खास बातें

१. पुरी समुद्र के किनारे पर स्थित है यहां का मौसम सम रहता है. अर्थात सर्दियों में कम सर्दी और गर्मियों में कम गर्मी रहती है. सर्दियों में यहां ज्यादा आनंद आता है. इसी कारण दिसम्बर और जनवरी में यहां सबसे ज्यादा भीड़ रहती है.

२. पंडों से सावधान रहें. जैसे ही पुरी स्टेशन आने वाला होगा तमाम पंडे आपको घेरेंगे. आप उनसे बात न करें. सीधे मन्दिर में जाकर जितने रूपये का प्रसाद चढ़ाना हो पंडे को बताएं.

३. शंख-मोती खरीदते समय सावधानी बरतें कहीं ठगे न जाएं.

४. पुरी का बाजार बड़ा शानदार है यहां पीतल के तरह-तरह के बर्तन एवं मूर्तियां मिलती हैं यहां कपड़ों की भी बहुत वैरायटी है. एक से एक सुन्दर साड़ियां, कुर्ते, सलवार सूट, लुंगिया, गमछा आदि मिलते हैं, आवश्यकतानुसार उन्हें जरूर खरीदें.

५. समुद्र का पूरा आनंद उठाना है तो समुद्र के किनारे के पास ही ठहरें. प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा भी समुद्र के नजदीक ही प्रेमियों के आवास और सत्संग मेले के आयोजन की व्यवस्था की जा रही है.

६. मंदिर में चढ़ाया प्रसाद अवश्य लाएं और घर-परिवार रिश्तेदारों को बांटें.

संकलन–श्री गुरूचरण कमलाश्रित

धमतरी में नये प्रेम प्रकाश आश्रम का उद्घाटन रायपुर व भाटापारा में वार्षिकोत्सव

यात्रा-दर्शन

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संतमण्डली का देशाटन

मनींला (8 से 13 जनवरीं 2005)

खार मुबंई का वार्षिक महोत्सव को पूर्णकर श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराजजी संत हरिओमलालजी, संत लक्ष्मणजी, संत हरीशकुमारजी, संत संजयजी के साथ फिलीपीन्स की राजधानी मनीला ८ जनवरी को रात्रि ८:३० बजे पहुंचे. दो वर्ष के उपरांत मनीला में रह रहे भक्त सद्गुरू महाराजजी के दर्शन पाकर हर्षातिरेक हो जयघोष करने लगे. पुष्प मालाएं पहिनाकर स्वागत कर प्रेमीजन गुरुदेव भगवान व सन्त मण्डली को श्री देव-गोपी के निवास पर कारों के काफिले में लाया गया ,यहीं पर महाराजश्री के रहने की व्यवस्था की गयी थी. मनीला आते समय हांगकांग विमानतल से इसी विमान में श्री अर्जनदास , दलपत व सन्त नामदेवजी भी स्वामीजी के साथ मनीला आए .श्री शंकरलाल सामतानी ,बसरु भी परिजनों सहित सद्गुरु महाराजजी के दर्शनार्थ पंहुचे. प्रेमियों का अपार स्नेह प्रभुप्रेम का परिचायक है. पंजाबी -सिन्धी समाज ने हिन्दू मन्दिर में आयोजित पंचदिवसीय दिव्य सत्संग-समागम में सैकड़ों की संख्या में भाग लेकर सत्संग-सेवा-दर्शन के ब्रह्मयज्ञ का अमृत चखा. सत्संग पश्चात् भोजन भण्डारे में भी सम्मिलित प्रेमी अनुशासित रहकर प्रसादी पाकर निहाल होते.मनीला में रह रहे प्रेमी जयपुर,अजमेर,मुम्बई,कल्याण आदि शहरोंके रहते हैं .

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने प्रेम से सनी ओजस्वी वाणी द्वारा प्रेमियों को भगवद्भक्ति का अमृत पिलाते हुए बताया-

आचार्य सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज ज्ञान की पराकाष्टा पर पंहुचे, भक्ति में लवलीन वैराग वृत्ति में मन को स्थित करके संसार से न्यारे होकर उन्होंने जंगलमें जाकर प्रभु परमात्माके श्रीचरणोंमें अपना तन-मन अर्पण कर आत्म साक्षात्कार किया और भटके हुए लोगों को भगवद्भक्ति का मार्ग दिखाकर जगत का कल्याण किया .स्वामीजी गीता उपदेश का मर्म बताते हुए लोगों को सद्उपदेश द्वारा सावधान कर रहे हैं ,आसन को लगाना तो सरल है पर मन को स्थिर रखना बड़ा मुश्किल है . इसी प्रकार गुरु का मिलना आसान है परन्तु नाम में मन लगाना मुश्किल है. महापुरुषों की वाणी मन को विवेक देती है,जीवन को जगाती है. ज्ञान भी वैराग के बिना अधूरा है,ज्ञानके द्वारा ही निर्वाण पद की प्राप्ति होती है.

महापुरुषों के बताये मार्ग पर चलकर ही मंजिल पर पंहुचा जा सकता है लेकिन इस मार्ग पर चलकर कोई विरला ही पंहुचता है. ऐसा गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को बताया. मनीलावासियों को पांच दिन कब बीत गये पता ही नहीं चला,वो तो जब १३ तारीख सभी प्रेमी देव के घर इक्कट्ठे हुए और पता चला कि आज मकर संक्रान्ति पावन पर्व पर गुरूदेव भगवान अगली यात्रा पर प्रस्थान करने वाले हैं. गुरूदेव भगवान के आशीर्वचनों के पश्चात् पूज्य स्वामीजी और संतमण्डली द्वारा प्रातः ६:३० बजे मनीला विमानतल की ओर प्रस्थान किया गया. प्रातः ११ बजे मनीला से रवाना होकर बैंकांक, हांगकांग के रास्ते रात्रि ८:३० बजे मुबंई पहुंचे. ९:३० बजे प्रेम प्रकाश आश्रम, खार पहुंचकर विश्राम किया.

मुंबई (15-16 जनवरीं 2005)

प्रेम प्रकाश आश्रम, खार, मुंबई में दो दिवसीय सत्संग दर्शन का लाभ सद्गुरू महाराजजी के सानिध्य में मुंबई वासियों ने बड़ी संख्या में उठाया. १६ जनवरी को सायंकाल ५:३० बजे मुंबई-हावड़ा एक्सप्रेस द्वारा रायपुर की ओर रवाना हुये.

रायपुर (17-20 जनवरी 2005)

१७ जनवरी को सायंकाल ४ बजे रायपुर रेल्वे स्टेशन का नजारा अलौकिक था. उपस्थित सैकड़ों की संख्या में भक्तजनों द्वारा सद्गुरू महाराजजी की जयघोष से सारा वातावरण आल्हादित हो रहा था. उल्लास से परिपूर्ण प्रेमियों ने सद्गुरू महाराजजी के दर्शनकर पुष्पवर्षा की तो सारा प्लेटफार्म पुष्पों की महक के साथ सत्पुरूषों की सुगंध से महक उठा.

फूलों से सजे रथ में पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संतमण्डली को विराजमान कर एक भव्य शोभायात्रा में बैंडबाजों सहित डांडियां रास करते भजन गाते प्रेमियों का अपार समूह सायंकाल ६ बजे शैलेन्द्रनगर स्थित आश्रम पहुंचा. भजन कीर्तन आरती के पश्चात् प्रेमियों को दर्शनानंद का लाभ देकर सत्गुरू महाराजजी विश्राम स्थल पर विश्रामी हुये.

प्रतिदिन प्रातः सायंकाल सत्संग की ज्ञानगंगा में रायपुर वासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया. सेवा सत्संग दर्शन की त्रिवेणी में स्नानकर अपने को पावन किया. सद्गुरू महाराजजी के अतिरिक्त संत जयदेवजी, संत हरिओमलाल, संत दयाप्रकाश, संत संजय, संत हरीश, संत श्रीमुक्त ने भी प्रेमियों को अमृत पिलाया.

१६ जनवरी सायंकाल सत्संग में कल्याण से आयी माता डॉ. मीरादेवी, भाटापारा से माता मोहिनी देवी व रायपुर, गोदिंया की माताओं ने भजन-गायन द्वारा सबको आनंदित किया. तत्पश्चात् सायं ५:३० से ६:३० बजे तक बालक मण्डली द्वारा नृत्य नाटिकाओं का मंचन्न गुरूदेव के प्रति उनके उत्साह उमंग को दर्शाता था. दिव्या मोटवानी, सपना मेघानी, कनक, सागर हासवानी, वर्षा-पूजा थौरानी, संध्या-सुमन-आरती तलरेजा, मोनिका सबलानी, निकिता मोटवानी, नेहा चिमनानी, नेहा-निशा थौरानी, प्राची सबलानी, एकता-रेशमा धर्मानी, सोनिया पंजवानी, दीपा-साक्षी सबलानी, निशा सचदेव ने अध्यापिका पुष्पा बहन के निर्देशन में आचार्यश्री के जीवन की अनेक लीलाओं को अपने अभिनय द्वारा जीवन्त कर दिया. सद्गुरू महाराजजी द्वारा सभी को पुरूस्कृत किया गया.

२० जनवरी को प्रातः हवन-यज्ञ के उपरांत श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावंदन का आयोजन हुआ. पाठों के पारायण व सत्संग के पश्चात् आम भण्डारे में हजारों प्रेमियों ने सश्रद्धा पावन प्रसाद ग्रहण किया. सायंकालीन सत्संग सभा के पश्चात् पल्लव पाकर उत्सव की समाप्ति हुई.

बेमेतरा (21 जनवरी 2005)

अमरापुर वाहन से सद्गुरू महाराजजी संतमण्डली सहित चलकर प्रातः ८ बजे बेमेतरा पहुंचे. श्री जमुनालाल सुखवानी के निवास पर प्रवास हुआ. शाम को सत्संग श्री सिन्धु भवन में हुआ.

मुंगेली (22 जनवरी 2005)

बेमेतरा से अमरापुर वाहन द्वारा प्रातः १० बजे मुंगेली श्री रामचंदजी के निवास पर पहुंचे. स्वागत सत्कार उपरांत सत्संग आयोजन हुआ. स्वलपहार के उपरांत पूज्य सद्गुरू महाराजजी-मण्डली द्वारा भाटापारा के लिये प्रस्थान किया गया.

भाटापारा (22-24 जनवरी 2005)

नगर प्रवेशद्वार पर अनेक दुपहिया चौपहिया वाहनों पर केसरिया ध्वजा लगाये सैकड़ों की संख्या में प्रेमी उत्साह उमंग के साथ उपस्थित थे, ज्योंही अमरापुर वाहन द्वारा सद्गुरू महाराजजी का संतमण्डली के साथ नगरमें प्रवेश हुआ. बैंडबाजोंकी मधुर धुन पर जय-जयकार करते प्रेमी नाचने गाने लगे. पुष्पवर्षा करते आनन्द के सागर में लहराते हुए भक्तजन सद्गुरु महाराजजीको एक विशाल शोभायात्रामें आश्रम पर ले आये.

पूज्य माता समझबाई के वार्षिक उत्सव को सत्गुरु महाराज की अध्यक्षता में धामधूम के साथ मनाया गया . यहां पर भी रायपुर की बालक मण्डली ने पुनः अपनी प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया .यहां पर आचाश्री व श्रीकृष्ण भगवान की लीलाओं का चरित्र चित्रण अत्यन्त सराहनीय रहा. अपार जनसमूह के मध्य भगवान श्रीकृष्ण, सत्यभामा, रूकमणी रासलीला के साथ ऋषिराज नारद का नृत्य कोई **मुरली की तान सुना दे ओ कन्हैया-कन्हैया, पत मेरी राखो बंसी बंजईया** के भजन गायन से हुआ.

२३ जनवरी को हवन,ध्वजावन्दन,शोभायात्रा का आयोजन महत्वपूर्ण था . भाटापारा के प्रेमियों का उत्साह श्रद्धा प्रेम तो बस महसूस करने लायक है.२४ जनवरी को माता समझबाई का वार्षिक उत्सव पूर्ण कर पूज्य स्वामीजी चकरभाटा व बिलासपुर पंहुचे.

चकरभाटा बिलासपुर (25 जनवरी 05)

भाटापारा में माता समझबाई कां वर्सी उत्सव पूर्ण कर सद्गुरू महाराजजी संतमण्डली भक्त प्रेमियों के साथ बिलासपुर में श्री मनोहरलाल जी के यहां पर पाठों के भोग व सत्संग समारोह में सम्मिलित हुये. यहां पर पूज्य गुरू महाराजजी के सत्संगामृत का पान बिलासपुर शहर के सिंधी समाज ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर किया. पूज्य स्वामी देवप्रकाशजी की बहनश्री व संत बुधरप्रसादजी के भ्राता ओंकारलाल के घरों को पवित्र करते हुये शाम ५:३० बजे कोरबा पंहुचे.

कोरबा (25 से 27 जनवरी 2005)

रानी रोड स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम को फूल पत्तियों व विद्युत झालरों से अत्यंत आकर्षक रूप में सजाया गया था, अपने मालिक सांईं टेऊँरामजी के गादीनशीन सांईं भगतप्रकाशजी महाराज के आगमन की खुशी में. शाम ५:३० बजे कोरबा पहुंचने पर स्वागत सत्कार उपरांत पूज्य सिंधी पंचायत द्वारा संचालित सिंधी धर्मशाला में त्रिदिवसीय सत्संग समारोह का आयोजन किया गया था, यहां पर सत्संगामृत का पान उपस्थित नगरवासियों को सद्गुरू महाराजजीके मुखारविंदसे हुआ.

२७ जनवरी को हवन, ध्वजावंदन, भण्डारे का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ. माता पम्मीदेवी ने सद्गुरू महाराजजी के आगमन पर आभार व्यक्त करते हुये भविष्य में भी गुरू महाराज जी को कोरबा जल्दी-जल्दी आने का भाव भरा निमंत्रण दिया.

बड़गढ़ (28-29 जनवरी 2005)

बड़गढ़ में पुराने प्रेमी श्री हरीराम आसूदानी के निवास पर गुरूदेव भगवान व संतमण्डली का प्रवास हुआ. दो दिवसीय सत्संग कार्यक्रम सिंधु भवन में हुआ. जहां पर सिंधी समाज के अतिरिक्त अन्य सभी समाजों के सैकड़ों भक्तों ने संत दर्शन व सत्संग का आनंद लिया. हरीराम, प्रेमचंद, होतचंद, नारायणदासजी एक बड़ी हवेलीनुमा भवन में रहते हैं, जहां पर प्रति शनिवार सत्संग कीर्तन कर पावन प्रसाद ढोढा चटनी वितरण भी नियमित किया जाता है. यहीं पर २८ जनवरी को हवन यज्ञ का आयोजन गुरूदेव भगवान के सानिध्य में हुआ. इस अवसर पर सत्संग में जयपुर से पधारे भक्त किशनचंद जी ने १४ भुवनों के वृतांत को गीत के रूप में गाया.

राजिम (30 जनवरी)

बड़गढ़ में प्रेमियों को अमृत पिलाकर सद्गुरू महाराज संतमण्डली का प्रस्थान राजिम के लिए हुआ. मार्ग में रायपुर शहर से होते हुये प्रेमियों को दर्शन भोजन का आनंद देते हुये दोपहर ३ बजे राजिम पहुंचे. यहां पर स्वामीजी के स्वागत में शोभायात्रा का आयोजन किया गया था. नाचते गाते बैंड़बाजों के साथ अशोक, कोमल, सुनील गुनानी के घर पर पहुंचे, यहीं पर विश्राम की व्यवस्था की गई थी. सत्संग का आयोजन झूलेलाल मंदिर में शाम ५ से ७ बजे तक हुआ जिसमें राजिम का पूरा सिंधी-हिन्दू समाज एकत्रित था. सत्संग सभा में सेवा सत्संग दर्शन की त्रिवेणी में स्नानकर प्रेमी भोजनानंद से भी तृप्त हुये.

धमतरी (31 जनवरी से 2 फरवरी तक)

नवनिर्मित प्रेम प्रकाश आश्रम का उद्घाटन

जनवरी माह का अंतिम दिन और धमतरी में हर वर्ग के लोगों में जबरदस्त उत्साह. वहां के समाचार पत्रों के अनुसार ऐसी उमंग वर्षों बाद यदाकदा ही देखने को मिलती है. प्रेम प्रकाश आश्रम चेरीटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में वहां के स्थानीय विधायक श्री इंदर चौपड़ा की अगुवाई में सारा नगर उमड़ पड़ा था धमतरी के नगरप्रवेश द्वार पर. ठीक ६:३० बजे दूर से आते जब श्री अमरापुर रथ पर लगी ध्वजपताका टकटकी लगाये श्रद्धालुओं ने देखी तो शुरू हो गये बैंड बाजे ढोल तासे, खुशी से लबरेज लोगों का उल्लास सड़कों पर छलक आया था. मंद-मंद मुस्कान से सबको हृदयाशीष करते पूज्य गुरू महाराज जी के पावन दर्शन कर तो बस नाच उठे नगरनिवासी भक्तगण और उसमें सम्मिलित हो गये

छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के विभिन्न नगरों से आये श्रद्धालुजन. मनोरम झाकीयों के साथ नयनाभिराम शोभायात्रा का श्रीगणेश हुआ श्री पुरूषोत्तम वसानी के निवास से. फूलों की अलग-अलग किस्मों से सजे शाही रथ पर सद्गुरू महाराजजी संत जयदेवजी संत हरिओमलालजी व संतमण्डली के साथ तारों के बीच चंद्रमा समान प्रतीत हो रहे थे. एक-सी वेषभूषा धारण किये १०८ महिलाऐं सर पर कलश लिये एक अभिनव दृश्य प्रदान कर रहीं थीं. इधर छत्तीसगढ़ के आकर्षक पंथी नृत्य ने तो सबको मंत्रमुग्ध कर दिया था. जिला प्रशासन की ओर से भी शोभायात्रा की सुरक्षा व यातायात के लिए सुचारू व्यवस्था की गई थी. नया बसस्टेण्ड, सिहावा, शास्त्री चौक से होते हुये महावीर नगर स्थित नवनिर्मित प्रेम प्रकाश आश्रम पर प्रातः११ बजे जब शोभायात्रा पहुंची तो वहां पर जैन समाज की ओर से चंदुलाल जैन व अतीश कुमार जैन ने महाराजश्री का आत्मीय अभिंनदन किया. जिला पंचायत सदस्य नवीन टंडन के साथ ताराचंद हिन्दूजा, सुधीर गुप्ता, सुरेश अठवानी, बालचंद रोहरा, अशोक रोहरा, नरेन्द्र रोहरा, महेश रोहरा, रामू रोहरा, राजेन्द्र शर्मा, राजा देवांगन, भीमनदास जसुजा, मोहन लालवानी, सन्मुखदास पंजवानी, फूलचंद वाधवानी, रमेशलाल देवानी, अर्जुन जसवानी, कन्हैयालाल क्षत्रिया, धरमदास वाधवानी, नारायणदास वसानी, परसामल वाधवानी, प्रकाश वाधवानी, धरमदास चांदवानी, वीरूमल, भजनलाल, टीकमदास, आनंदराम मुंजवानी, रामचंद वाधवानी, अशोक वाधवानी, महेश वाधवानी, अशोक माखीजा, सुरेश कलवानी, चूहड़मल, चंद्रकांत त्रिवेदी, भूपेश शाह, आसूदामल जसुजा, लक्ष्मण हिन्दूजा, देवेन्द्र मिश्रा, रंजीत छाबड़ा, भरत सोनी आदि ने भी महाराजश्री का स्वागत किया.

गणमान्य जनों की उपस्थिति में हजारों श्रद्धालुओं के कर जुड़ गये जब हमारे हृदय सम्राट पूज्य गुरूवरने अपने पावन कर-कमलों से रिबन काटकर नवनिर्मित आश्रम का विधिवत् उद्घाटन कर प्रवेश किया. जहां पर प्रवेश करने के उपरांत गत दो दिनों से चल रहे हवन पूजन कार्यक्रम विधि को तृतीय दिन पूर्णाहुति मिली गुरूदेव के सानिध्य में. इसी के साथ आचार्यश्री व लक्ष्मीनारायण के श्रीविग्रहों की प्राणप्रतिष्ठा भी हुई और स्वामीजी के करकमलों से जब मूर्तियों का अनावरण हुआ तो सभी भक्तजन देव -गुरू मूर्तियों के दर्शनकर परम आनंदित हुये. सद्गुरू सर्वानंदजी महाराज, सद्गुरू शांतिप्रकाशजी महाराज, सद्गुरू हरिदासरामजी महाराज के तैल चित्रों का अनावरण भी स्वामीजी ने किया, इसीके साथ श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावदंन होकर आरती पल्लव उपरांत आम भण्डारा हुआ. जिसमें पूरी धमतरी नगरीके निवासियों ने गुरूदेव का पावन प्रसाद श्रद्धा भाव से पाया.

एक व दो फरवरी को प्रातः ८ से १० व सायं ४:३० से ७ बजे तक सत्संग की अमृतवर्खा में धमतरी नगर के साथ-साथ बाहर से आये प्रेमियों ने हजारों की संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिया. अमेरिका से आयी माता कमल चैनानी भी इस अवसर पर उपस्थित थी. दो फरवरी को सायंकालीन सत्संग के पश्चात् पल्लव पाकर गुरूदेव भगवान ने सबको शुभाशीर्वाद देकर महोत्सव को सम्पन्न किया. परम पूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के श्रीमुख से प्रवाहित अमृत-

कहे टेऊँ हरि नाम जप भूलो ना क्षण एक.
भोगत भोगत विषय रस बींते जनम अनेक.
मूते सत्गुर अहिड़ी ॿाझ करि का.
तुहिंजो मिठिड़ो सदा नामु ध्यायां.
यादि तुहिंजीअ में गुजिरे हयाती.
तोखे बाबल कद॒हिं ना भुलायां.

दुखों से भरे इस संसार में काफी जन्म गुजर चुके हैं. संसार सदा परिवर्तनशील है. इस दुर्बल मानव देही में हमें सभी पदार्थ सुलभ है परंतु यह जीव पाप माया में फंसकर झूठ को सत्य मानकर फंसा हुआ है. इसलिए लक्ष्य को पहचानो जिस हेतु आये हैं, सत्कर्म करें शुभ कर्म करने से शांति प्राप्त होकर गुरू ज्ञान से मुक्ति प्राप्त होगी. संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानंदजी महाराज, संत जयदेवजी, संत हरिओमलालजी, संत दयाप्रकाशजी, संत नरेश प्रकाशजी (इन्दौर), संत श्रीमुक्तजी, संत लक्ष्मण, संत संजय, संत हरीश, भक्त वीरभानदास, भक्त मूलचंद, भक्त किशनचंद, भक्त द्वारिकादास, माता मीरादेवी (कल्याण) उद्घाटन महोत्सव में सम्मिलित थे.

श्री अमरापुर धाम जयपुर में महाशिवरात्रि महोत्सव
((मंगलवार 8 मार्च 2005))

कार्यक्रम

प्रातः 7 से 10 बजे तक
प्रार्थना–सत्संग–हवन

सायं 4:30 से 6:30 तक
भजन–सत्संग–आरती

प्रातः 10 से 11बजे तक
श्री अमरापुरेश्वर मंदिर में ध्वजावंदन, पूजा–अर्चना, जलाभिषेक, पंचास्त्रोतम् का पाठ, आरती एवं विशाल भण्डारा

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में प्रेम प्रकाश आश्रम की स्थापना का दूसरा वार्षिक महोत्सव

डबरा
गुरूवार 10 से शुक्रवार 11 मार्च तक
दिव्य सत्संग समारोह
प्रातः 8:30 से 10:30 बजे तक
सायं 5 से 7:30 बजे तक
स्थान :
प्रेम प्रकाश आश्रम ढीमरपुरा, डबरा
फोनः 07524–223245

मुरैना
रविवार 13 से मंगलवार 15 मार्च तक
दिव्य सत्संग समारोह
प्रातः 7 से 9 बजे तक
सायं 4:30 से 6:30 बजे तक
स्थान :
प्रेम प्रकाश आश्रम सिंधी कॉलोनी, मुरैना
फोनः 07532–230280 मो. 9425162280

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में

प्रत्येक रविवार सत्संग
प्रातः 7 से 9:30 बजे तक
प्रार्थना–सत्संग
पूज्य महाराजश्री के
अमृतवाणी की प्रवचन कैसेट्स
सायं 4:30 से 6:30 बजे तक
भजन–सत्संग–आरती

प्रत्येक गुरूवार शनिवार
प्रातः 7 से 8:30 बजे तक
प्रार्थना-सत्संग -गुरू प्रार्थनाष्टक
सायं 4:30 से 6:30 बजे तक
भजन–सत्संग–आरती
एवं सत्नाम साक्षी मंत्रमाला का जाप
व समाधि स्थल पर मनमोहक पुष्पों से श्रृंगारित झांकी दर्शन

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-१२

प्र.1 श्रीमदभागवत् महापुराण में कितने श्लोक हैं व किसके द्वारा लिखे गये हैं ?

उत्तर ....

प्र.2 प्रेम प्रकाश संदेश (जनवरी अंक) के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित लेख में शांति अशांति का मूल कारण क्या है ?

उत्तर ....

प्र.3 प्रेमप्रकाश संदेश(जनवरी अंक)के पृष्ठ 10 पर प्रकाशित लेखमें स्वर्ग नर्क किसे बताया गया है?

उत्तर ....

प्र.4 प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक चैत्र मेला जयपुर में कब मनाया जा रहा है ?

उत्तर ....

प्र.5 जितने कण के रेत के .... आचार्यश्री द्वारा रचित दोहे को पूरा करें ?

उत्तर ....

प्र.6 श्रीमदभगवत् गीता का उपदेश किसने किसको दिया ?

उत्तर ....

प्र.7 शास्त्रों में सबसे प्राचीन नदी कौनसी दर्शायी गयी है व आचार्यश्री का अवतरण कौनसी पवित्र नदी के तट पर हुआ ?

उत्तर ....

प्र.8 चेटीचंड महापर्व पर किस देवता की पूजा अर्चना की जाती है ?

उत्तर ....

प्र.9 श्री अमरापुर स्थान जयपुर में महाशिवरात्रि पर्व कब मनाया जा रहा है ?

उत्तर ....

प्र.10 साईं टेऊँराम लीला तेरी तू ही जाने नई ऑडियो कैसेट्सकी कंपनी व गायक का क्या नाम है?

उत्तर ....

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-११ के उत्तर

(१) ६ प्रकार की भक्ति १.श्रवण २.कीर्तन ३.स्मरण ४. चरणों की सेवा (पाद सेवन) ५.पूजा ६.अर्चना ७.वन्दन ८.दास्य ६.आत्म निवेदन (२) पुरूषोत्तम योग (३) नरसी भक्त (४) रविवार १३ फरवरी २००५, माँ सरस्वती का पूजन (५) १.काम २.क्रोध ३.लोभ ४.मोह ५.अहंकार (६) श्रीमती सुधा जौहरी (७) स्वामी ग्वालानंदजी (८) वर्तमान मण्डलाध्यक्ष सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज (६) जिन्होंने सत्यरूपी तपस्या के द्वारा इष्ट का दर्शन व साक्षात् किया हो व सम्प्रदाय की स्थापना की हो उसे आचार्य कहते हैं. (१०) साईं टेऊँराम लीला तेरी तू ही जाने टी.सीरीज कंपनी की प्रस्तुति है.

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-११ के सही उत्तर भेजने वालों के नाम

अमरापुर धाम जयपुर से-प्रेमप्रकाशी जय, रितेश, गुरूदास, इन्द्रकुमार, प्रकाश, ढालूराम, राजेश, महेश, गुड्डू **जयपुर से**-शंकरलाल सतवानी, अशोक कुमार, सारिका, जतिन पुरस्वानी, लवीना, हेमा प्रेमप्रकाशी, गोपी-पिंकी दत्तवानी, मीनू गुरवानी, सोना, यशिका, बाबू बच्चानी, मुरलीधर, भावना पारवानी, रेखा गुरनानी, दीपा, आशना बच्छानी, दीनदयाल वासवानी, हेमा, भारती, कविता-अशोक पुरसानी, बल्लु टी.रामानी **ब्यावर से**-नानकराम धनवन्ती वासवानी परिवार **जोधपुर से**-रेनू-ममता दयालदास खिमानी, भावना-दीपा बादलानी **अजमेर से**-निर्मला हीरानंद **खैरथल से**-रूपा नोतानी **भोपाल से**-हीरा-कन्हैयालाल सीतलानी **नासिक से**-संदीप सेवकानी, गुरूमुख, कविता, मनीष, रश्मि, दीपक, ऊषा, उमेश चंदानी **इन्दौर से**-मोनी-नरेशलाल प्रेमप्रकाशी **चांपा से**-वरियलदास प्रेम प्रकाशी **रायपुर से**-प्रेमप्रकाशी गंगाराम, अमरकुमार, आशा, शांता, कविता, सुशीला, किरण-कविता, मीरा, भागी, गीता.



आध्यात्मिक वर्गपहेली 15

प्रस्तुतिः सुधा जौहरी, तिलकनगर, जयपुर

1		2		3	ॐ	4	5
	ॐ		ॐ	6	7		
8	9			ॐ		ॐ	ॐ
ॐ		ॐ	ॐ	10			11
12		13		ॐ	ॐ	ॐ	
	ॐ		ॐ	14		15	ॐ
	ॐ	16			ॐ	17	
ॐ	18		ॐ	19			ॐ

आध्यात्मिक वर्गपहेली 14 के सही हल

1 द्वा	प	2 र	ॐ	3 क	श्य	4 प	ॐ
रि	ॐ	5 ई	श्व	र	ॐ	6 व	7 र
8 का	9 म	ॐ	ॐ	ॐ	10 म	न	सा
ॐ	11 रि	12 पु	द	म	न	ॐ	त
13 का	य	र	ॐ	ॐ	14 का	15 ज	ल
ॐ	16 म	न्द	बु	द्धि	ॐ	म	ॐ
17 सिं	ॐ	र	ॐ	ॐ	18 म	द	र
19 ह	वि	ॐ	20 ज	ठ	रा	ग्नि	ॐ

आध्यात्मिक वर्गपहेली-१४ (सही हल भेजने वालों के नाम-)

अमरापुर धाम जयपुर से-प्रेमप्रकाशी जय, रितेश, गुरूदास, इन्द्रकुमार, प्रकाश, ढालूराम, राजेश, महेश, गुड्डू **जयपुर से**-शंकरलाल सतवानी, अशोक कुमार. सारिका, जतिन पुरस्वानी, लवीना, हेमा प्रेमप्रकाशी, गोपी-पिंकी दत्तवानी, मीनू गुरवानी, सोना, यशिका, बाबू वच्चानी, मुरलीधर, भावना पारवानी, रेखा गुरनानी, दीपा, आश्ना बच्छानी, दीनदयाल वासवानी, हेमा, भारती, अनु-गोल्डी उमरानी, कविता-अशोक पुरसानी, बल्लु टी.रामानी **ब्यावर से**-जयकिशन, अनीता, हरीकिशन, लक्ष्मी वासवानी परिवार **जोधपुर से**-रेनू-ममता दयालदास खिमानी, भावना-दीपा बादलानी **गांधीधाम से**-रेखा के. वाधवानी, जयवन्ती भगतानी **भाटापारा से**-अजय चैनानी **खैरथल से**-रूपा नोतानी **भोपाल से**-हीरा-कन्हैयालाल सीतलानी **अहमदाबाद से**-रश्मि-मनोजकुमार कलवानी **सिवनी से**-दीपा-रामचंद माखीजा, पुष्पा मोहनानी **नासिक से**-संदीप सेवकानी, गुरूमुख, कविता, मनीष, रश्मि, दीपक, ऊषा, उमेश चंदानी **इन्दौर से**-मोनी-नरेशलाल प्रेमप्रकाशी **चांपा से**-वरियलदास प्रेम प्रकाशी **रायपुर से**-प्रेमप्रकाशी गंगाराम, अमरकुमार, आशा, शांता, कविता, सुशीला, किरण-कविता, मीरा, भागी, गीता.

बाएँ से दाएँ :

१. अन्तर में उठे दुष्विचार (५)
४. साधुओं द्वारा तप व भस्म रमाने हेतु प्रज्वलित अग्नि. (२)
६. दक्षिण का प्रसिद्ध बालाजी का तीर्थ.(४)
८. वैदिक ऋषि, श्री परशुराम के पिता. (४)
१०.सर्पधारी भगवान शंकर का एक नाम. (४)
१२.महाभारत का एक योद्धा जिसे बीच में से चीरने पर शरीर पु[...] जुड़ जाता था
१४.महा पंडित; जम, कुबेर, दिग्पाल जहां ते, कवि...कह सकइ कहां ते. (३)
१६.उल्टा नाम जपत जग जाना,....भए ब्रह्म समाना; रामायण के रचनाकार. (३)
१७.पृथ्वी;...जल. पावक. गगन. समीरा. (२)
१८.श्री महावीर स्वामी की उपासना करने वाला समुदाय; एक धर्म.(२)
१९.महारानी सुमित्रा के ज्येष्ठ पुत्र, भगवान राम के छोटे भाई, (

ऊपर से नीचे :

१. कामदेव का एक नाम. (३)
२. यश; बड़ाई. (३)
३. कामदेव की पत्नी. (२)
४. सूर्यदेव का प्रकाश; पूजा में जलाई गई सुगंधित बत्ती. (२)
५. आचार पद्धति; व्यवहार की रीति. (२)
७. श्रीकृष्ण की महारानी. (३)
९. सतारा के निकट का मंदिर जहां मची भगदड़ में अनेक जानें गईं. (३)
११.एक अप्सरा. (२)
१२.पक्षी, जिसने प्राण देकर सीता की रक्षा हेतु रावण से युद्ध किया. (३)
१३.सावित्री के पति जिन्हें पत्नी ने यमपाश से छुड़ाया. (४)
१४.मधुर गायन से बसंत आगमन की सूचना देने वाला पक्षी.(३)
१५.दिशा, जिस और पांव करके सोना वर्जित है.(३)

सही हल के लिए आगामी अंक देखें - सही हल भेजने वालों के नाम आगामी [...] मे प्रकाशित किये जाऐगें. सही हल के लिए वर्ग पहेली की छायाप्रति (फोटोकॉपी) करवा[...] अथवा इसी पर भरकर ५ मार्च तक कार्यालय में भिजवायें. प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्र[...] आश्रम, गाढवे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर - ४७४००१

साँई टेऊँराम बाबा की लीलाएँ

चित्रांकन, लेखन–सुधा जौहरी, जयपुर

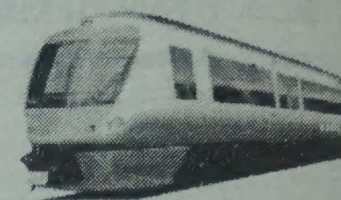




श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष



पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का



यात्रा-कार्यक्रम

14 से 16 फरवरी	2005 तक	सिवनी	07692-224752
17 फरवरी	2005	भण्डारा	07184-260177
18 से 21 फरवरी	2005 तक	नागपुर	0712-2583458,2581416
22 से 23 फरवरी	2005 तक	अमरावती,यवतमाल	0721-2670001
24 फरवरी	2005	अकोला	098231-80241
25 फरवरी	2005	बुरहानपुर	मो.098290-14850, 094140-67850
26 फरवरी	2005	इन्दौर	0731-2468140
27 फर. से 5 मार्च	2005 तक	जयपुर	0141-2372423,2372424
6 मार्च	2005	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
7 से 9 मार्च	2005 तक	ग्वालियर	0751-2426111
10 से 11मार्च	2005 तक	डबरा	07524-223245
12 मार्च	2005	दतिया,झांसी	07522-236333
13 से 15 मार्च	2005 तक	मुरैना	07532-230280
16 मार्च	2005	आगरा काला महल	0562-2369084
17 मार्च	2005	आगरा कमला नगर	0562-2382529
18 से 20 मार्च	2005 तक	आगरा केदार नगर	0562-2211499
21 से 22 मार्च	2005 तक	अलीगढ़	0571-2420591
23 मार्च से 2 अप्रेल	2005 तक	हरिद्वार	01334-260144,260815
4 से 6 अप्रेल	2005 तक	गांधीधाम	02836-229608
7 से 8 अप्रेल	2005 तक	राजकोट	0281-2578359
9 अप्रेल	2005	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
10 अप्रेल	2005 तक	जयपुर	0141-2372423,2372424
11से 14 अप्रेल	2005 तक	ब्यावर	01462-258198
15 से 28 अप्रेल	2005 तक	जयपुर	0141-2372423,2372424
29 से 30 अप्रेल	2005 तक	मन्दसौर	07422-245431,253122
1 मई	2005	उज्जैन	मो.098290-14850, 094140-67850
2 से 6 मई	2005 तक	इन्दौर	0731-2468140
7 से 8 मई	2005 तक	रतलाम	07412-238121
9 से 13 मई	2005 तक	दिल्ली	011-23859774,55199138

परम श्रद्धेय संत शिरोमणि त्यागी तपस्वी संत

स्वामी गणेशानन्दजी महाराज का १०४वाँ जन्मोत्सव

ग्वालियर में दिव्य सत्संग समारोह

शनिवार 5 मार्च से बुधवार 9 मार्च 2005 तक

कार्यक्रम

शनिवार 5 मार्च 2005 प्रातः 5 बजे आश्रम से हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी निकलेगी तत्पश्चात् आरती होकर श्रीमद्भगवदगीता,श्रीप्रेमप्रकाश ग्रंथ साहब का पाठ आरम्भ होगा. सायं 5 से 7:30तक सत्संग.

रविवार 6 मार्च 2005 प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग व जनेऊ संस्कार, सायं 4 बजे सड़क मार्ग से अमरापुर वाहन द्वारा श्री गुरूवर संतमण्डली सहित पधारेगें. सायंकाल सत्संग 5 से 7:30 बजे तक.

सोमवार 7 मार्च 2005 प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग सायं 5 से 7:30 बजे तक सत्संग

मंगलवार 8 मार्च 2005 महाशिवरात्रि पर्व जन्मोत्सव के उपलक्ष में प्रातः 6:30 से 10:30 बजे तक हवन, सत्संग, ध्वजावंदन, सायंकाल 5 से 7:30 बजे तक सत्संग, जन्मोत्सव के उपलक्ष में दीपोज्वलन.

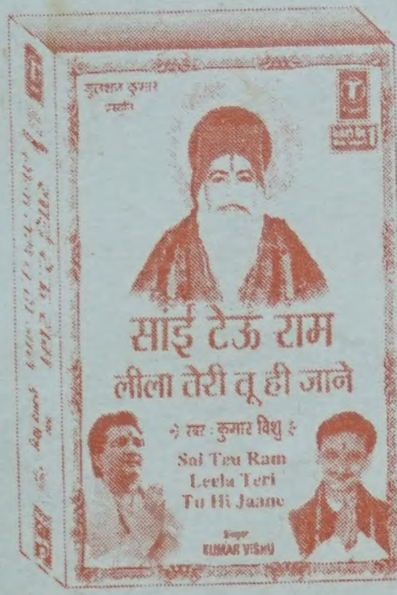
बुधवार 9 मार्च 2005 प्रातः 8 से 10:30 बजे तक सत्संग, पाठों का भोग, आरती एवं आम भण्डारा होगा. सायंकाल 5 से 7:30 बजे तक सत्संग, आरती होकर पल्लव पाकर उत्सव का समापन होगा.

आयोजन स्थल : स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम श्री महारूद्र मण्डल स्कूल के पीछे, गाढ़वे की गोठ, लश्कर ग्वालियर (म.प्र.) दूरभाष– 0751–2426111

तीज-त्यौहार

19 फर.05	शनिवार	- जया एकादशी व्रत
23 फर.05	बुधवार	- पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत
24 फर.05	गुरूवार	- स्नान दान की माघी पूर्णिमा
27 फर.05	रविवार	- श्री गणेश चतुर्थी व्रत
6 मार्च 05	रविवार	- विजया एकादशी व्रत
8 मार्च 05	मंगलवार	- महाशिवरात्रि व्रत, स्वामी गणेशानंद जयंती(ग्वा.)
10 मार्च 05	गुरूवार	- अमावस्या
11 मार्च 05	शुक्रवार	- चन्द्रदर्शन
13 मार्च 05	रविवार	- वैनायकी गणेशचतुर्थी व्रत
14 मार्च 05	सोमवार	- मीन संक्रान्ति
15 मार्च 05	मंगलवार	- सांई टेऊँराम चौथ
18 मार्च 05	शुक्रवार	- होलाष्टक प्रारंभ
21 मार्च 05	सोमवार	- आमलकी एकादशी, रंगभरी ग्यारस
25 मार्च 05	शुक्रवार	- पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत, होलिका दहन
26 मार्च 05	शनिवार	- धुलेण्डी, वसन्तोत्सव, होली
27 मार्च 05	रविवार	- भाईदूज
29 मार्च 05	मंगलवार	- श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
30 मार्च 05	बुधवार	- श्री रंगपचंमी
5 अप्रैल 05	मंगलवार	- पापमोचिनी एकादशी व्रत

डाक रजि. ग्वालियर संभाग - 161/2002-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा. शा. - 29/18/81-II



सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, उसे अच्छी तरह जाँचकर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए। - व्यवस्थापक

सदस्यता क्रमांक

श्रीमान

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी (सायं 4 से 8 बजे तक फोनः 0751-5045144, शेष समय 2454183)द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश कार्यालय से सज्जाकर रवि ऑफसेट (5078541), कम्पू, से मुद्रित करवाकर कार्यालयः स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया. फैक्स नम्बर- 0751-5045144 सम्पादकः शंकरलाल सबनानी, फोनः 0751-2327427, श्रीचंद पंजवानी, e-mail-editorpremprakashsandeshgwl@yahoo.co.in